ज्ञानामृत

वर्ष 48, अंक 11, मई 2013 (मासिक)
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

1.**इलाहाबाद**- कुम्भ मेले के दौरान आयोजित संत समागम का उद्घाटन करते हुए महामण्डलेश्वर वेद भारती जी, महामण्डलेश्वर रसिक जी, पीठाधीश अयोध्या, महामण्डलेश्वर प्रज्ञानन्द जी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, महामण्डलेश्वर पायलेट बाबा तथा अन्य। 2.**अहमदाबाद (महादेव नगर)**- युवा प्रभाग के राष्ट्रीय कार्यालय के नवनिर्मित भवन 'संगम तीर्थधाम' के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी, राजयोगिनी दादी जानकी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. चन्द्रिका बहन, गुजरात के पूर्व उप मुख्यमंत्री भ्राता नरहरि अमीन तथा अन्य।

1.शान्तिवन (आबू रोड)- सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता भ्राता अन्ना हजारे से ज्ञान-चर्चा करती हुई राजयोगिनी दादी जानकी तथा राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी। **2.राजकोट (राजनगर)**- सर्वधर्म सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए गुजरात के कृषि, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति राज्यमंत्री गोविन्द भाई पटेल, ब्र.कु. दक्षा बहन तथा विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधिगण। **3.देहरादून**- सर्वधर्म सम्मेलन में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. प्रेमलता बहन। मचासोन है उत्तराखण्ड के राज्यपाल महामहिम डॉ.अजीज कुरैशी, महामण्डलेश्वर स्वामी देवानन्द तथा अन्य। **4.अमृतसर**- शिवजयन्ती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सिविल सर्जन डॉ.यश मित्रा, भ्राता गुरबिन्दर सिंह, निदेशक, टीवी स्टेशन, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. आदर्श बहन तथा अन्य। **5.दिल्ली (लोधी रोड)**- 'शांत मन-आनंदमय जीवन' विषयक कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद ईश्वरीय स्मृति में है ब्र.कु. शिवानी बहन, वेदांत ग्रुप के प्रबंध निदेशक भ्राता एस.के.रूंगटा, ब्र.कु. गिरिजा बहन, ब्र.कु. पीयूष भाई तथा अन्य। **6.वाड़मेर**- शिवजयंती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के राजस्व मंत्री भ्राता हेमाराम चौधरी, ब्र.कु. बबीता बहन तथा अन्य। **7.ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर (गुड़गाँव)**- खेल प्रभाग द्वारा आयोजित सेमीनार 'रूल योर माइंड एंड विन इन लाइफ' का उद्घाटन करते हुए अल्पसंख्यक मामलों के केन्द्रीय राज्यमंत्री भ्राता निनोंग इरिंग, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. जगबीर भाई तथा अन्य। **8.समस्तीपुर**- शिव जयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणि, ब्र.कु. रानी बहन, ब्र.कु. बिन्नी बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से ..

परचिन्तन पतन की जड़

मनुष्य का मन सदा कुछ न कुछ चिन्तन तो करता ही रहता है। जैसा चिन्तन वह करता है वैसा उसका स्वभाव बन जाता है। कुछ लोग तो दूसरों के प्रति कल्याण की भावना रखते हुए अपने विकास में ही अपना समय और अपने संकल्प सफल करते हैं। वे दूसरों से भी गुण ही लेते हैं। वे स्व-चिन्तन करते हुए आत्मानुभूति के रस में लवलीन रहते हैं, पर-चिन्तन करके अपने मन को मैला नहीं करते।

आत्मिक शक्ति के विकास के लिए आत्म-चिन्तन आवश्यक है। आत्म-विस्मृति के कारण मनुष्य शरीर से अपना तादात्मय स्थापित कर लेता है और घोर देहभान में फँसकर विकारी, दुखी और अशान्त हो जाता है। तब आत्म-चिन्तन द्वारा ही वह आत्माभिमानी और निर्विकारी बनकर सच्ची सुख-शान्ति की प्राप्ति कर सकता है। मैं पाँच तत्वों का बना विनाशी शरीर नहीं वरन् सदा जागती ज्योति, सर्वशक्तिवान परमपिता परम-आत्मा शिव की संतान ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ – इस सत्य की गहरी अनुभूति हो जाने से हमारे जीवन में एक दिव्य और अलौकिक परिवर्तन आता है। सर्वशक्तिमान परमात्मा की संतति होने पर भी हम अशक्त और असमर्थ कैसे हो सकते हैं? आनन्द के सागर और शान्ति के सागर की संतान हम दुखी और अशान्त क्यों हैं? प्रेम के सागर परमात्मा के बच्चे भला आपस में लड़-झगड़ कैसे सकते हैं? इस तरह गुणों के सागर परमात्मा के दिव्य गुणों का चिन्तन करने से वे गुण हमारा स्वभाव बनते जाते हैं और धीरे-धीरे हम सर्वगुण संपन्न बन जाते हैं। अत: आत्म-चिन्तन और ईश्वर-चिन्तन ही आत्म-कल्याण का एकमात्र साधन है।

निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य दूसरों में वही अवगुण देखता है जो स्वयं उसमें विद्यमान रहता है। बाह्य संसार दर्पण मात्र है जो हमारी आत्मा को सत्य रूप में प्रतिबिम्बित करता है। उस दर्पण में हम अपनी वास्तविकता का दर्शन कर सकते हैं। ईर्ष्यालु व्यक्ति को प्रतीत होगा कि सभी लोग उससे ईर्ष्या करते हैं। अर्थ-लोलुप व्यक्ति को सभी लोग घोर भौतिकवादी प्रतीत होंगे और विषयी को सारी सृष्टि काम-पीड़ित दृष्टिगत होगी। जब हम किसी की ओर एक अंगुली उठाते हैं तो बाकी चार अंगुलियाँ स्वत: ही हमारी ओर उठ जाती हैं। यह भी सिद्ध करता है कि दूसरे में जो अवगुण हम देखते हैं वह हममें उससे चार गुणा अधिक विद्यमान है। अत: आध्यात्मिक साधकों को पर-छिद्रान्वेषण न कर उन अवगुणों की जड़ अपने में ही खोजनी चाहिए। ❖

अमृत-सूची

- आत्मिक प्रेम *(सम्पादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 6
- सचित्र सेवा समाचार 8
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- विदेश में ईश्वरीय सेवा 10
- नशा: नाश का पैगाम *(कविता)* 13
- दधीचि ऋषि जैसा तप 14
- सशक्त कलम.....17
- आत्महत्या से आत्मबल की ..19
- शरीर से न्यारा होने की 20
- पशुत्व के प्रतीक दो जहर.... 23
- ब्रह्माकुमार स्टीव नारायण 24
- सचित्र सेवा समाचार 28
- शिवबाबा की छत्रछाया.....30
- तनावमुक्त जीवन के सूत्र 31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- आवश्यक सूचना 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

सम्पादकीय ..✍

आत्मिक प्रेम

एक बहुत बड़ा प्रश्न यह है कि विचार कहाँ उत्पन्न होते हैं? श्वास लेने के लिए हमारे पास श्वास नली है, नाक से श्वास आती-जाती महसूस होती है परन्तु शरीर में कोई विचार नली है क्या? नहीं ना, तो विचार कहाँ से उत्पन्न होते हैं। जब हम भोजन खाते हैं, भले ही अन्धेरे में खाएँ, हमारा हाथ सीधा मुँह में जाता है। परन्तु जब हम सोचते हैं, तब हाथ सीधा मस्तक पर जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि सोचने की शक्ति मस्तक में है (मस्तक सिर का अगला हिस्सा है, सोचते हैं तो हाथ आगे ही जाता है, पिछले हिस्से में नहीं)। अब अगला प्रश्न है, मस्तक में कोई चिन्तन अंग है क्या? नहीं ना। वास्तव में विचार करना भौतिक प्रक्रिया नहीं है, यह अधिभौतिक, आत्मिक प्रक्रिया है इसलिए इसके लिए अंग नहीं बल्कि अधिभौतिक सत्ता आत्मा, यह कार्य अपनी एक शक्ति मन द्वारा करती है। आत्मा दोनों नेत्रों के बीच भ्रकुटि में निवास करती है। हमारे पास ऐसे कृत्रिम यन्त्र हैं जिनसे हम कृत्रिम श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया आपातकाल में कुछ समय चला सकते हैं, कृत्रिम हृदय से रक्त संचरण करा सकते हैं परन्तु कृत्रिम मन नहीं है जिससे आपातकाल में चिन्तन करवाया जा सके।

मस्तक है शरीर की शान

इतनी महत्त्वपूर्ण शक्ति शरीर में जहाँ निवास करेगी वहाँ का महत्त्व भी सर्वोपरी रखा जाएगा। मानव शरीर में मस्तक और सिर का महत्त्व अति-अति विशेष है। यूँ तो हर अंग महत्त्वपूर्ण है परन्तु आत्मा राजा का निवास होने के कारण मस्तक शरीर की शान है। आदर प्रकट करने के लिए बहुत सारे तरीके हैं पर जब सिर झुका दिया जाता है तब ही सम्पूर्ण समर्पण और सम्पूर्ण निष्ठा प्रकट होती है। देवालय में अनेक प्रकार की भेंट चढ़ाने के साथ-साथ सिर भी झुकाते हैं कि हम मन, बुद्धि, संस्कार सहित आपको समर्पित हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में यदि सब कुछ गंवाना भी पड़े तो भी हम सिर को नहीं झुकाते, इस आशय से कि आप हमारा सब कुछ छीन सकते हो पर हमारे मन और बुद्धि पर अधिकार नहीं कर सकते।

शरीर का अस्तित्व आत्मा के रहने तक

सरकार भी शरीर की सुरक्षा के लिए कई नियम बनाती है। वाहन चालक के लिए हैलमेट पहनने या बेल्ट बांधने का नियम भी आत्मा के निवास स्थान मस्तक और सिर की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। यदि हाथ, पाँव कट जाएँ, दाँत या आँख चली जाए तो भी व्यक्ति जिंदा रह सकता है पर आत्मा की सीट को चोट लग जाए, वह क्षतिग्रस्त हो जाए तो वह शरीर में रहेगी नहीं, इसे छोड़कर भाग जाएगी अर्थात् व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी। ये सब बातें हमें सोचने पर मजबूर करती हैं कि इस शरीर का अस्तित्व आत्मा के इसमें रहने तक है, उसके निकलते ही यह ढांचा चरमरा जाता है, नष्ट हो जाता है।

अपराधों के पीछे कामाग्नि

जब शरीर का आधार आत्मा ही है तो हमारा प्रेम भी आत्मा से ही होना चाहिए परन्तु आज हम देख रहे हैं कि संसार में शरीर के प्रति प्रेम और विकृत आकर्षण का बोलबाला है। आज होने वाले अधिकतम अपराधों के पीछे है काम विकार की अग्नि। शरीर को विकार का साधन मानकर मनुष्य उसकी तरफ आकर्षित होता है और इस आकर्षण में सामाजिक नियम, रिश्तों की मर्यादा और सामने आने वाले परिणाम को नज़र अन्दाज कर देता है। कहा गया है, **लम्हों ने खता की, सदियों ने सजा पाई,** इस सत्य के अनुसार कुछ लम्हों की काम अग्नि कइयों का जीवन जला देती है। समस्याओं से भरे संसार में एक और नई दुख की लहर चला देती है। देश और समाज का जो समय और संकल्प सार्थक, समर्थ चिन्तन में

लगना चाहिए वह इस प्रकार के काम-काण्ड की काली करतूतों से मन के, अखबारों के, किताबों के पन्ने काले करने में तथा टी.वी. की स्क्रीन को रंगने में व्यर्थ चला जाता है। फिर चल पड़ती है कानूनों के संशोधन और अपराधियों पर अंकुश की एक लम्बी बहस परन्तु **सबसे बड़ा कानून तो अपने मन पर लगाना होता है। जब तक मन को दिशा नहीं, मन को ज्ञान नहीं, मन को सत्य का साक्षात्कार नहीं तब तक कानून कागजों में लिखे पड़े रह जाते हैं और दिशाहीन मन कोई और नई काली करतूत का काला ध्वज लहरा देता है।**

शरीर है मुखौटा

उपरोक्त कवायद से बचने के लिए भगवान शिव ने एक छोटा-सा महामन्त्र दिया है जो संसार के हर आयु, लिंग, देश, धर्म वाले व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है। वह मन्त्र यह है कि तुम अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो तो काम अग्नि में जलती इन्द्रियाँ शीतल हो जाएंगी और मन को मिलेगा असीम सुकून। कई बार हम खेल, नृत्य, नाटक करते समय जानवर या राक्षस के मुखौटे लगा लेते हैं, मुखौटा अर्थात् (मुँह + खोटा) खोटा मुँह। सच्चा नहीं, झूठा मुँह। असली मुँह उस खोटे मुँह के पीछे छिपा रहता है। खेल पूरा होने पर उस मुखौटे को उतार देते हैं। सृष्टि रंगमंच पर हम भी नर या नारी का मुखौटा लगाकर पार्ट बजा रहे हैं। हमारा असली रूप तो इस मुखौटे के पीछे छिपा हुआ है, वो है आत्म रूप। असल में हम आत्मा हैं, केवल खेलने के लिए यह मुखौटा लगाते हैं, जो खेल पूरा होते ही उतर जाता है। शेर का मुखौटा लगाने वाले को हम असली शेर नहीं मानते, न ही उससे भयभीत होते हैं क्योंकि असलियत जानते हैं। इसी प्रकार जब हम इस सत्य को जान जाते हैं कि नर या नारी चोला तो मात्र मुखौटा है, इसे धारण करने वाली तो आत्मा है, तो हम विकृत तरीके से आकर्षित होने या आकर्षित करने से बच जाते हैं।

मूर्खता है शरीर रूपी चमड़े से दृष्टि चिपकाना

किसी फैक्टरी में जाते हैं तो उत्पाद के पहले रूप से लेकर उसके अन्तिम रूप तक की सारी जानकारी हमें मिल जाती है। कपड़े को ही ले लीजिए, जिसे हम कमीज़ कहते हैं यदि उसकी सिलाई उधेड़ दी जाए तो वह कमीज़ ना कहला कर कपड़ा कहलाएगा। यदि उसके धागे निकाल लिए जाएँ तो वह कपड़ा ना कहलाकर धागों का गोला बन जाएगा। यदि धागों का बट निकाल दिया जाए तो वह रूई (कपास) बन जाएगा। कहने का भाव यही है कि रूई का रूप बदलते-बदलते कमीज़ बन गया, मूल रूप तो रूई ही है। इसी प्रकार यदि हम कहते हैं, अमुक व्यक्ति के हाथ बहुत सुन्दर हैं तो हाथ वास्तव में क्या हैं, पतली-पतली हड्डियों पर चढ़ा हुआ माँस, माँस के बीच बहता खून और फिर माँस के उपर चढ़ा चमड़ी का कवर। हर अंग का निर्माण इसी प्रकार होता है। इन चार चीज़ों के साथ-साथ असंख्य कीटाणु, पसीना, बदबू, मवाद आदि भी आजकल के अंगों में रहते ही हैं। इन्हीं अंगों से मिलकर शरीर बनता है, तो क्या हमें हड्डी और माँस का आकर्षण है? बिना आत्मा को जाने, शरीर रूपी चमड़े से दृष्टि चिपकाना तो निरी अज्ञानता है, मूर्खता है। यह तो एक प्रकार से मालिक को जाने बिना उसके घर की दीवारों और चूने से दृष्टि चिपकाने के समान है।

इसलिए किसी को भी देखते समय उसके मस्तक पर ध्यान एकाग्र कीजिए जिससे रूहानी स्नेह उत्पन्न होगा। इस स्नेह में ना कोई शोषक, ना कोई शोषित, ना धोखा, न ठगी, न दिखावा, न गलत परिणाम, ना सामाजिक भय, न बंधन। इस प्रेम पर भगवान भी प्रसन्न होते हैं। ऐसे रूहानी प्रेम की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती है। ऐसे प्रेम की बेल इतनी तीव्र गति से बढ़ती है कि वह एक से शुरू होकर कई दिलों तक फैलते-फैलते सारी मानवता पर छा जाती है। शरीर का प्रेम जहाँ गड्ढे में पड़ा सड़ा हुआ दूषित जल है वहीं आत्मिक प्रेम नदी का बहता स्वच्छ जल है जो बेहद में रहकर सबको सच्ची तृप्ति प्रदान करता है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- एक-दो के साथ सम्बन्ध में आते किस बात का ध्यान रखें?

उत्तरः- जब मैं साकार बाबा को देखती हूँ तो चार रूप सामने आते हैं। एक मेरा साकार बाबा, फिर अव्यक्त बाबा, फिर निराकार बाबा, फिर नारायण रूप। सत्य नारायण स्वामी, अन्तर्यामी। जानता सब कुछ है पर कहता है, मैं कुछ नहीं जानता हूँ। परमात्मा मेरे को जाने तो और सब जान जायेंगे, थोड़ा धीरज रखो। पहले मैं प्यार से, एक-दो को अच्छी तरह जानूं, उनको प्यार दूँ। समय आयेगा, वह भी पहचान लेगा। 'मैं' शब्द सम्भलकर बोलो। जब कहते, मेरा यह विचार नहीं है, तो यह किसने कहा? विचारों को मिलाना पड़ता है। आपका विचार मेरे से मिला तो मेरा ठीक रिश्ता रहेगा। मैं यह नहीं मानती हूँ, आप गलत कहते हो... इस प्रकार मैं नहीं कहूंगी। एक-दो के साथ संबंध में इतनी सभ्यता हो। अगर मुझे पुरुषोत्तम बनना है तो मुझे रीस नहीं करनी है, गुप्त रेस ज़रूर करनी है। बाबा की याद में दौड़ी लगानी है, ऐसी दौड़ी लगायें जो पुरुषार्थ करके थक न जायें। कोई दौड़ी लगाते थक जाते हैं, कोई विजयी बन जाते हैं। पुरुषार्थ में अगर हम दौड़ी लगायें तो शान है। दौड़ी वही लगा सकेगा जो कभी थकता नहीं है। बहुत बहन-भाई थक जाते हैं। बहुतों के साथ काम करना पड़ता है, तो थकावट हो जाती है। अपने से पूछना है, हू एम आई? दिन रात अपने आपसे पूछो, मैं कौन हूँ? यह कौन है, बुद्धि को व्यर्थ घुमाने की ज़रूरत नहीं है। सब बहन-भाई हैं, ड्रामा में हर एक का पार्ट नूंधा हुआ है। हर एक अपने अनुसार अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हैं। मुझे शुभ भावना रखनी है।

प्रश्नः- संगमयुग में हमारी ज़िम्मेवारी और फर्ज क्या है?

उत्तरः- सभी जवाबदारी बाबा को दे दो। मेरा वह ज़िम्मेवार है। कभी यह ख्याल नहीं आ सकता है कि मुझे कौन सम्भालेगा! चिंता वा फिकर की कोई बात नहीं है। हर प्रकार से बाबा मेरा ज़िम्मेवार है। मेरी ज़िम्मेवारी क्या है? न हम किसका फिकर करें, न मेरी कोई फिकर करे। फिर मेरा फर्ज़ क्या कहता है? मेरा फर्ज कहता है, मेरे बाबा का यज्ञ है, मेरे बाबा के सब बच्चे हैं, शिवबाबा कल्याणकारी है, बच्चे विश्व कल्याणकारी हैं। विश्व गोला है, मैं उस पर खड़ी हूँ। जब ऐसी मेरी दृष्टि-वृत्ति होगी, तो दृष्टिकोण भी ऐसा होगा। सारी बात है मनोवृत्ति की। वृत्ति हमारी शुद्ध, श्रेष्ठ और दृढ़ संकल्प वाली हो तो भावुकता की बातें हमारे चेहरे पर नहीं आयेंगी। पुरानी बात चेहरे पर आ गई, मैंने कुछ देख लिया, बोल दिया तो सम्बन्ध बिगड़ गया। हमारा सम्बन्ध विश्व कल्याणकारी का है। फिर बातचीत में सदा ही सम्मान होगा। किसको सम्मान न देकर मुझे अपना रिकार्ड खराब नहीं करना है। यह सम्मान नहीं देता है, मैं क्यों दूं... यह ख्याल भी नहीं आयेगा। मुझे सम्मान देने का रिकार्ड अच्छा रखना है। रिकार्ड खराब हुआ तो जो कमाई की वह खलास हो गई। भले कितनी भी

कमाई की, कितना भी पुरुषार्थ किया, एक बार रिकार्ड खराब हुआ तो कमाई खत्म।

प्रश्नः- मनसा सेवा स्वतः होती रहे इसकी विधि क्या है?

उत्तरः- निमित्त भाव से, सच्चाई से, प्रेम से, नम्रता के भाव से ऐसी चलन चलो जो नेचरल नेचर बाप समान बन जाए और किसी को भी न देखो। हमारे अन्दर घड़ी-घड़ी आता है, बाबा को देखो, बाबा से सुनो, तो हम अपने दिल में, मनसा में यह बात पक्की कर लेवें, मनसा हमारी सच्ची है तो सेवा स्वतः करेगी। आत्मा में जो मन-बुद्धि पहले थे, अब बदल गये। पहले आत्मा कर्मबन्धनी थी, अभी आत्मा बंधनमुक्त बनी है। मन-बुद्धि आत्मा को इशारा करते हैं, तुम पहले वाली नहीं हो, बाबा की हो, तुम्हें कर्मातीत बनना है। तुम्हें बाबा के साथ-साथ जाना है फिर सतयुग आदि में आना है। यह अपने को समझाकर रखें तो विजय हुई पड़ी है। फिर मीठा बनने के लिए सदा मीठा बोलो, मुस्कराते हुए बोलो। सच्चा सही पुरुषार्थ नहीं होता है तो मुस्कराना मुश्किल हो जाता है। उदासी अन्दर होगी तो चेहरे पर आयेगी। बाबा ने कहा है कि जो उदास होगा वह दास-दासी बनेगा। बाबा की ऐसी मीठी-मीठी बातें अन्दर गूंजती रहें। मेरे बहन-भाई मुरली को प्यार करो, बाबा की बातें प्यार से सुनो, जीवन में लाओ, सदा मुस्कराओ, तो कोई बात मुश्किल नहीं है। छोटा-सी बात को बड़ा, राई को पहाड़ नहीं बनाओ। लम्बी-लम्बी बातें नहीं करो। कोई बात बड़ी भी है तो उसे छोटा कर देना समझदार का काम है।

प्रश्नः- राजयोग का अच्छा अभ्यास कब होता है?

उत्तरः- बाबा का बनने से सच्चाई के आधार से दिल अगर साफ है तो योग अच्छा लगता है। और कोई बात अगर दिल में है या किसी ने मेरी निंदा की, मेरा चिंतन चला तो योग नहीं लगेगा। जो बात अपने को पसंद नहीं आयी हो या कुछ भी हो तो दिल में वही बात याद आती रहेगी। तो सच्ची दिल से, दिलाराम बाप की याद से, साहेब को राज़ी कर सकते हैं। और कोई की याद वा कोई बात सब पराई हैं। पराई चीज़ को, मोह वश, लोभ वश अपना समझना पाप है। बाबा ऐसे पाप करने से छुड़ा रहा है। पहले चाहिए-चाहिए करते थे। अभी बिगर मांगे सब कुछ भगवान दे रहा है। आज्ञाकारी बच्चे को बहुत अच्छी आशीर्वाद का अनुभव होता है। बाबा का यह फरमान है, यह नहीं करना है, जी बाबा। ऐसे ईमानदार, फरमानबरदार बच्चों को बाबा की बहुत आशीष मिलती है। परन्तु अगर जरा भी इसमें कमी है तो योगी नहीं है।

प्रश्नः- कौन-सा नशा हो तो माया कुछ नहीं कर सकती?

उत्तरः- यही धुन लगी हुई हो कि मैं गुलाम न बनूँ, माया के दबाव में न आ जाऊं। इसके लिए किसी हठयोग की जरूरत नहीं है। कोई माला-मंत्र लेके बैठने की दरकार नहीं है। लेकिन जैसे महारथी जब हाथी पर बैठता है तो कितना शानदार लगता है परन्तु हाथी के कान में चींटी चली गयी तो बिचारा बेहोश हो जाता है। तो माया की, दुनिया की चटपटी, खटपटी बातें सुनीं तो कहेंगे, अरे, यह महारथी और इसको क्या हो गया! कोई न कोई बात ऐसी आयी तो ऐसे हो गया इसलिए अब यह ध्यान रखो कि मैं कौन हूँ? मैं किसका हूँ? मैं परमात्मा की हूँ, तो ध्यान परमात्मा में ही लगे। भले और कुछ भी काम करो पर ध्यान परमात्मा में हो। बाबा यही राजयोग हमको सिखा रहा है। तो महारथी हूँ, यही मेरी राजाई, मेरी शान है। यही स्वमान, यही नशा हो तो माया कुछ नहीं कर सकेगी।

अगर सिर्फ ज्ञान सुना और सुनाया, स्वदर्शन चक्र फिराने का ध्यान ही नहीं है। अमृतवेले बाबा परिक्रमा दे रहा है, मैं मिस क्यों करूँ। ज्ञान-योग की शक्ति कमल फूल समान न्यारा बनाती है। मेरे दो पांव हैं। जब दोनों चलेंगे तब आगे दौड़ते जायेंगे। पहले चलना सीखे, फिर दौड़ना सीखे, अभी उड़ना सीखे हैं।❖

'पत्र' संपादक के नाम

फरवरी, 2013 के अंक में प्रकाशित 'विशेषता शिवरात्रि की' ने शिवरात्रि मनाने के पीछे की सभी भ्रांतियों को दूर कर दिया। शिवरात्रि की सही महिमा से खुद व परिवार के सभी सदस्यों को परिचय प्राप्त हुआ। दादी जानकी के उत्तर बहुत ही आत्मिक शान्ति देते हैं। 'अंतर्मन की ओर निवेश' बहुत ही प्रेरणास्पद लेख है जो जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन ला सकता है। 'श्रेष्ठ संकल्पों की कमाल' मन को नियंत्रण में रखने हेतु बहुत ही प्यारा लेख है।

– राकेश चतुर्वेदी, भोपाल

फरवरी, 2013 का सम्पादकीय 'काम के गटर में तड़पता समाज' मन को छू गया। यह समाज के लिए बहुत ही प्रेरणाप्रद, सामयिक, आँखें खोलने वाला है। मैं वृद्ध तथा अपंग हूँ पर मानसिक रूप से बिल्कुल स्वस्थ हूँ इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ का ही बड़ा योगदान है।

– बनवारी लाल अग्रवाल, कोलकाता

फरवरी, 2013 अंक के सम्पादकीय 'काम के गटर में तड़पता समाज' में बहुत ही सहज तरीके से बहुत गंभीर बात समझाई है कि काम रूपी रावण क्या कर रहा है। ऐसे नाजुक समय में स्वयं परमात्मा पिता आकर हमें जागृत कर रहा है।

– बल्लू राम, पादोवा (इटली)

फरवरी, 2013 अंक के संपादकीय 'काम के गटर में तड़पता समाज' के द्वारा समाज को संदेश दिया गया है कि दुख, अशांति, निराशा, अवसाद का कारण काम विकार ही है। काम से ही सभी विकारों की उत्पत्ति है। बिना इससे मुक्ति के सुख, शांति, प्रेम, आनंद, पवित्रता, ज्ञान की प्राप्ति नहीं होगी। विकारों को रावण, कंस, राक्षस माना गया है। पूज्य वही है जिसने विकारों पर विजय प्राप्त कर ली है। सभी प्रकार के सुख, वैभव, आनंद, शांति प्राप्त करने का उपाय है विकारों का त्याग। आपका प्रयास स्तुत्य एवं वंदनीय है।

– ब्र.कु. आर. श्रीवास्तव, रायपुर

मार्च अंक में 'भ्रूण हत्या: अध्यात्म में है समाधान' लेख अत्यंत सराहनीय है। ज्ञानामृत पत्रिका वास्तव में अपने नाम को सार्थक करती है। इसके लिए पूरे ब्रह्माकुमारीज़ परिवार को साधुवाद!

– राजीव शर्मा, सहारनपुर

कामुकता को रेखांकित करता आलेख 'काम के गटर में तड़पता समाज' (ज्ञानामृत, फरवरी) एक आईना है जिसमें संस्कारहीन समाज का वीभत्स चेहरा हमारे सामने है। नैतिक मूल्य और आचरण ही अच्छे समाज का निर्माण करते हैं। सामयिक सम्पादकीय हेतु साधुवाद!

– मनोहर मंजुल, पिपल्या-बुजुर्ग

'प्रेम : एक महान गुण' लेखनी की उड़ान को सराहने में मेरी कलम असमर्थ है। लेख में शायद ही प्रेम के किसी पक्ष को छोड़ा गया है। माताओं के क्रोध में भी छिपा प्रेम और बाबा द्वारा उच्च प्रेम के बीज अंकुरण का विवरण बहुत गहन समझ देने की सेवा कर रहा है।

– शैलेन्द्र, इंदौर

ज्ञानामृत के सभी लेख एक से बढ़कर एक हैं। फरवरी अंक के तीन लेख मन की गहराइयों को छू गये। 'प्रेम : एक महान गुण' में लेखक ने विचार सागर मंथन द्वारा प्रेम रूपी मक्खन और मिश्री अपने पाठकों में बाँटी है। सम्पादकीय लेख 'काम के गटर में तड़पता समाज' में विकसित समाज को जागृत करने के लिए तीखा प्रहार किया गया है, अवश्य असर करेगा। 'अंतर्मन की ओर निवेश' में लेखिका ने बड़े सहज और सुन्दर ढंग से अन्तर् की ओर यात्रा करने की प्रेरणा दी। आज हमें बाह्य सुन्दरता की अपेक्षा आंतरिक गुणों से सशक्त होने की अत्यंत आवश्यकता है, तभी पूज्यनीय और वंदनीय होंगे।

–ब्र.कु. स्वदेश, कुरुक्षेत्र

विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ - 6

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

शास्त्रों में एक सिद्धांत वर्णित है – कार्य-कारण संबंध अर्थात् कारण का कार्य के साथ संबंध होता ही है। इसका अनुभव संगम में बहुत हुआ होगा, फलस्वरूप द्वापर में यह सिद्धांत बना होगा। इसका अनुभव निम्नलिखित है –

जुलाई, 1973 में आदरणीया दादी जी ने मुझे तथा ऊषा जी को चार मास की ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका जाने की छुट्टी दी थी। अमेरिका का दस साल का वीजा हमें मिल गया था परंतु जब इंग्लैण्ड के वीजा के लिए एप्लीकेशन दिया गया तो सितंबर मास में उसकी स्वीकृति आई अर्थात् हम 31 मार्च, 1974 तक लंदन जा सकते थे। इस प्रकार 6 मास का वीजा हमें मिल गया।

उन्हीं दिनों दिल्ली में बहुत बड़े मेले का आयोजन होने वाला था इसलिए हम दोनों दिल्ली में एक मास से ज्यादा समय रहे और मेले के आयोजन में सहयोग दिया। फरवरी, 1974 में वही मेला दिल्ली से मुंबई लाया गया जिसमें विभिन्न जोन्स के बहन-भाइयों ने अपने वहाँ की प्रसिद्ध कलाकृति के आधार पर स्टॉल सजाये थे जैसे कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल का मॉडल मेले के केन्द्रीय स्थान पर बनाया गया था जो दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता था। मेले की समाप्ति के बाद सभी जोन्स ने अपने-अपने स्टॉल हटा लिये थे, केवल कलकत्ते का विक्टोरिया मेमोरियल का मॉडल ही रह गया था। उसे उठाने के लिए कारीगर ट्रेन से आ रहे थे परंतु ड्रामा अनुसार उनकी ट्रेन 12 घंटे लेट थी। सुबह 7 बजे के बदले वे लोग रात को 7 बजे पहुँचे।

अफ्रीका के जांबिया देश के एक प्रतिष्ठित व्यापारी रामभाई पटेल उस रात मुंबई में एक होटल में ठहरे थे। सुबह टैक्सी से अपने एजेन्ट के पास जा रहे थे कि रास्ते में मेले में रखा विक्टोरिया मेमोरियल का मॉडल देखा तो मेले के अंदर आये, वहाँ बैठी वेदांती बहन से कहा कि आपके इस मॉडल का मुझे फोटो चाहिए। मुझे लुसाका शहर में हिंदू मंदिर बनाना है, इस प्रकार के मॉडल का घाट वहाँ बनाना चाहता हूँ। वेदांती बहन ने कहा कि सारा सामान तो कोलाबा सेन्टर पर चला गया है इसलिए आप कोलाबा सेन्टर पर जाइये। रामभाई एक भाई को लेकर कोलाबा सेन्टर पर गये। वहाँ मॉडल का फोटो नहीं था इसलिए वे वापस मेले के स्थान पर आये। वेदांती बहन ने उनसे कहा कि हम ऐसे आपको फोटो नहीं देंगे, पहले आप सात दिन का कोर्स कीजिए। उन्होंने कहा, मैं मुंबई में चार दिन ही हूँ तो सात दिन का कोर्स कैसे करूँ? वेदांती बहन ने कहा कि आप सुबह-शाम आइये, सात दिन का कोर्स हो जायेगा। इसके बाद उन्होंने मैदान में ही पहला पाठ लिया और वेदांती बहन ने शाम की क्लास में उन्हें कोलाबा सेन्टर पर बुलाया जहाँ उनका परिचय दादी पुष्पशांता से हुआ। उस दिन वे लौकिक मामा के घर रात को देरी से पहुँचे तो मामी ने कारण पूछा। उन्होंने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारियों के पास सात दिन का कोर्स कर रहा हूँ। मामी ने कहा, यह बहुत अच्छी संस्था है, हमारे पड़ोसी की बेटी ऊषा और उनका दामाद रमेश भाई इसके बहुत अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। इस प्रकार हम दोनों का परिचय राम भाई को अनायास मिल गया तथा यह भी पता चल गया कि यह संस्था अच्छी है।

उनका सात दिन का कोर्स साढ़े तीन दिन में पूरा हो गया। उस दिन शाम को, जिन्होंने भी मेले द्वारा कोर्स किया था, उनके साथ बड़ी दीदी मनमोहिनी का कोलाबा सेन्टर पर स्नेह-मिलन रखा गया था। राम भाई भी आये थे। रात को उनकी हांगकांग की फ्लाइट थी। राम भाई ने बड़ी दीदी को अपने देश जाम्बिया में सेवाकेन्द्र खोलने का निमंत्रण दिया। दीदी ने

कहा, हम ऐसे ही बहनों को नहीं भेजेंगे, पहले किसी को भेजकर पता करेंगे कि वहाँ बहनों की सुरक्षा है या नहीं, फिर सेवाकेन्द्र खोलेंगे। उन्होंने कहा, बोलिए, किसको भेजेंगे? बड़ी दीदी के मुख से निकला, हमारे रमेश भाई और ऊषा बहन लंदन से अमेरिका जाने वाले हैं, हम उन्हें आपके पास अफ्रीका भेज सकते हैं। राम भाई फौरन हमारे पास आये और पूछा कि आप कब आयेंगे? हमने कहा, हम आयेंगे। हमने उन्हें अपना पता दिया और उन्होंने हमें अपना पता दिया और फिर वे हांगकांग चले गये। हमारा भी इंग्लैण्ड का वीजा 31 मार्च को समाप्त होता था इसलिए हम 28 मार्च, 1974 को लंदन जाने के लिए निकले। निकलने से पहले एक पत्र राम भाई को भेज दिया।

लंदन में हमें पहले इंडिया टी हाउस में, फिर श्रीलंका टी हाउस में प्रदर्शनी करनी थी इसलिए हम वहाँ रुके ताकि मदद कर सकें। कुछ चित्र हम लेकर गये थे, बाकी के चित्र लेकर दादी जानकी और जयंती बहन लंदन एयरपोर्ट पर पहुँचे। हम उन्हें लेने गये थे। दादी जानकी के हाथ में विश्व का गोला था। गोले को घुमाते-घुमाते ही वे बाहर आये। यह देख हमारे मन में संकल्प आया, दादी जी विश्व सेवा के निमित्त बनेंगी। दादी जी अप्रैल, 1974 के पहले हफ्ते में लंदन आये।

हमारा पत्र जो हमने निकलने से पहले लुसाका (जांबिया की राजधानी) भेजा था, वो जैसे ही राम भाई को मिला, राम भाई ने लंदन में हमें फोन किया कि आप जांबिया कब आ रहे हो, मैं आपको टिकट भेजता हूँ। हमने कहा कि आप टिकट भले भेजो पर अभी हम प्रदर्शनी के आयोजन में व्यस्त हैं, हम बाद में आपको बतायेंगे। परंतु राम भाई रोज हमें लंदन फोन करते रहे कि कब आ रहे हो। उन्होंने दादी जानकी को भी फोन पर बड़ी दीदी का वचन याद दिलाया।

हम दोनों लंदन से जर्मनी गये, वहाँ दो दिन रहे, फिर एथेन्स गये। हमारी पश्चिम के दर्शनशास्त्र (Western Philosophy) में बहुत रुचि थी। मेरे मन में एक संकल्प है कि शिवबाबा के ज्ञान का पाश्चात्य दर्शन शास्त्र में क्या प्रभाव है, उसके बारे में भी विस्तृत लेख या किताब लिखनी चाहिए। उदाहरण के लिए शिवबाबा कहते हैं कि सृष्टि चक्र पाँच हज़ार वर्ष में रिपीट होता है। पाश्चात्य दार्शनिक प्लूटो ने लिखा है कि सृष्टि चक्र हूबहू दस हजार वर्ष के बाद रिपीट होता है। भारतीय शास्त्रों में जैसे बाबा का ज्ञान आटे में नमक जितना है, ऐसे ही ग्रीस फिलॉसफी में भी बाबा के ज्ञान के कई रत्न आटे में नमक मुआफिक हैं।

वहाँ से हम इजिप्त और नैरोबी गये। इस विदेश यात्रा के लिए विदाई लेते समय अव्यक्त बापदादा ने कहा था कि आप कहाँ के लिए निकले हो और कहाँ जाने वाले हो, यह तो ड्रामा ही बतायेगा। बच्चे, आप देने के लिए जा रहे हो, इसलिए किसी से भी धन लेना नहीं है। इन दोनों बातों की सत्यता हमें बाद में मालूम चली। हम निकले थे अमेरिका जाने के लिए लेकिन जाना पड़ा अफ्रीका। नैरोबी में चार दिन रहे, वहाँ रामायण कथा में ऊषा जी का रोजाना प्रवचन होता था। प्रवचन के दौरान आनंद भाई के सम्पर्क में आये। उन्होंने कहा, यहाँ जो संन्यासी-महात्मा आते हैं, वे लाखों रुपया इकट्ठा करके भारत में ले जाते हैं, आप भी जितना कहो, उतना इकट्ठा करके दे सकता हूँ। परंतु हम तो मना करते रहे। हम नैरोबी से तंजानिया देश के दारेसलम शहर गये। वहाँ आनंद भाई के साले का घर था, वे हमें एयरपोर्ट पर लेने आये। जैसे ही हम उनसे मिले, उन्होंने आनंद भाई के शरीर छोड़ने का दुखद समाचार हमें सुनाया। शरीर छोड़ने से पहले उन्होंने साथी भाई से ब्रह्माकुमारी संस्था की महिमा की कि उन्होंने एक भी पैसा नहीं लिया और ही अपनी तरफ से पैसा खर्च किया। ऊषा जी ने आनंद भाई के साले को चार दिन में कोर्स कराया। दारेसलम में

बहुत अच्छी सेवा हुई, हिन्दू महासभा में प्रवचन हुए, वहाँ से हम जांबिया के लुसाका शहर पहुँचे जहाँ राम भाई हमें मिले। उनके घर में ही अलग से रहने का स्थान, किचन आदि सब मिल गये। पहले ही दिन शाम के क्लास में लोग आने लगे और उसमें राम भाई का छोटा भाई दया भाई आये। क्लास में दाखिल होने से पहले ही दया काका ने सिगरेट का अंतिम कश लेकर उसे फेंक दिया और यह उनका अंतिम कश था। लुसाका में बहुत अच्छी सेवायें हुई। सारे देश में ब्रह्माकुमारीज़ का नाम बाला हो गया। हमने वहाँ की सुचारु आर्थिक एवं राजव्यवस्था को देखकर मुंबई और लंदन फोन कर दिया कि यहाँ पर सेफ्टी बहुत अच्छी है इसलिए सेवाकेन्द्र खुल सकता है। शील दादी ने हमारा समाचार आबू भेजा और आबू से टेलीग्राम द्वारा छुट्टी मिली कि आप वहाँ गीता पाठशाला खोल सकते हैं, हम यहाँ से बहनें भेजेंगे। राम भाई ने कहा, हम तो बाबा का सेवाकेन्द्र खोलना चाहते हैं।

राम भाई ने ही जांबिया के अलग-अलग स्थानों पर हमें सेवा के लिए भेजा। जांबिया में उन दिनों भजन सम्मेलन होता था जिसमें तीन-चार दिनों तक चौबीस घंटे भजन-प्रवचन होते थे। अभी यह भजन सम्मेलन लिविंगस्टन में होना था। वहाँ भजन सम्मेलन के मुख्य कार्यकर्त्ता के घर हम रहे। सुबह उठे तो देखा कि वह मुख्य कार्यकर्त्ता हमारे विद्यालय द्वारा छपे हुए लक्ष्मी-नारायण के चित्र को मंदिर के मध्य में रख उसकी आरती कर रहा था। उस भाई ने बताया कि जब मैं आबू गया, वहाँ आपका लक्ष्मी-नारायण का चित्र देखा तो ले आया और अपने मंदिर में रख लिया। मेरा अनुभव है कि आपका यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र बहुत पावरफुल है, हम जो भी इच्छा रखते हैं, उसकी पूर्ति इस चित्र द्वारा हमें होती है। यह कहकर उसने फिर से आरती शुरू कर दी और हमें कहा कि आप भी ताली बजाकर 'जय जगदीश हरे..' वाली आरती गाइये। हम दोनों ने भी आरती में उनका साथ दिया।

लिविंगस्टन से हम वापस लुसाका आ गये। वहाँ जाने से पहले लंदन में दादी जानकी से राय-सलाह हुई। उन्हें भी आबू से संदेश मिला था कि आप लंदन से जाम्बिया जाइये और वहाँ सेवा का प्रारंभ कीजिये। राम भाई ने दादी जानकी के लिए भी टिकट भेज दी। हम जैसे ही लुसाका पहुँचे, वैसे ही दादी जानकी के भी आने का समाचार मिला। हमने उन्हें रिसीव किया। दादी जानकी हमारे साथ आठ-दस दिन रहे। वहाँ हमने कानूनी तौर पर वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल सोसायटी का रजिस्ट्रेशन कराया और राम भाई को इस सोसायटी के नाम पर मकान लेने की स्वीकृति दी। एक अच्छा म्यूजियम बनाने का संकल्प भी उन्हें दिया। वहाँ से हम वापस नैरोबी गये। नैरोबी में पाँच दिन रहे क्योंकि हमें लगता था कि अफ्रीका की सेवा का मुख्यालय नैरोबी में होना चाहिए। वहाँ से हम लेगोस गये। वहाँ भी अच्छी सेवा हुई। लेगोस में एक टीवी कार्यक्रम 'लेगोस्कोप (Lagoscope)' बहुत प्रसिद्ध था जिसमें शहर में आये विशिष्ट मेहमानों का इंटरव्यू होता था। हमें दस मिनट का समय मिला था परंतु ऊषा जी की ईश्वरीय ज्ञान की बातें सुन उन्होंने दस मिनट के बदले तीस मिनट हमारा इंटरव्यू चलने दिया। बाद में हमने उनसे पूछा कि यह ईश्वरीय संदेश कितने लोगों को मिला तो उन्होंने कहा कि सारे देश में यह कार्यक्रम बहुत प्रसिद्ध है। कम से कम चार करोड़ लोगों ने आपका संदेश देखा व सुना। हमने इंटरव्यू में अपने झाड़, त्रिमूर्ति के चित्र भी दिखाये थे तथा परमात्मा का परिचय भी दिया था। इस कार्यक्रम के कारण हमें टीवी की प्रचार शक्ति का अनुभव हुआ।

लेगोस में हम हांगकांग के दादा राम और सावित्री बहन की बेटी के घर ठहरे थे। वहाँ से हम मेनरोविया (Monrovia) गये जहाँ गोविन्द भाई जिनके पुरुषार्थ के आधार पर ही

दादियों को जापान का निमंत्रण मिला था, के पास हम ठहरे। वहाँ भी कई पुराने सिन्धी थे। मेरठ की देवता दादी के रिश्तेदार भी बहुत थे। वहाँ भी बहुत अच्छी सेवा हुई परंतु तब तक भारत में हमारे लिए कुछ विशेष कार्य आ गया इसलिए दोनों दादियों ने हमें भारत वापस आने को कहा। इसलिए हम तीनों ही वापस लंदन गये। वहाँ एक दिन रहकर मैं और ऊषा जी वापस भारत आ गये। दादी जानकी लंदन में ही रहकर ईश्वरीय सेवायें करने लगे। दादी जी के पवित्र पुरुषार्थ के फलस्वरूप देश-विदेश में प्यारे बाबा का नाम प्रसिद्ध हो गया।

जब हम लंदन में एक-दो मास रहे थे, तब लंदन में ईश्वरीय विश्व विद्यालय को रजिस्टर्ड करने के लिए एप्लीकेशन दिया था, पहले तो उसकी मना हो गई फिर मुरली दादा के कनेक्शन से अन्य सोलिसिटर द्वारा एप्लीकेशन दी गई और विश्व विद्यालय रजिस्टर्ड हो गया और स्थायी रूप से लंदन और विश्व की सेवा शुरू हो गई।

बाद में राम भाई अनेक बार लंदन गये, दादी जानकी से मिलते रहे और उनके धन के सहयोग के कारण जमैका, जर्मनी, मॉरिशियस, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, अफ्रीका, हांगकांग आदि-आदि स्थानों पर ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। सन् 1975 में अव्यक्त बापदादा पहली बार डबल विदेशी भाई-बहनों के लिए अलग से मिलने को आये और वह रस्म आज तक भी चालू है।

सन् 1971 में ढाई मास हम अमेरिका रहे थे। हम दोनों की तीव्र इच्छा थी कि अमेरिका में अपना सेवाकेन्द्र स्थापित हो। हमारी ये इच्छा प्यारे बापदादा ने 1977 में पूर्ण की, वह अगले लेख में लिखूँगा। ❖

नशा – नाश का पैगाम

कवि दैवीचन्द कौशिक, उत्तम नगर, दिल्ली

नशा नाश का रूप है, करता सुख से दूर।
समर्थ जीवन को करे, पग-पग पर मजबूर।।
पग-पग पर मजबूर, काम है सभी अटकते।
बीबी-बच्चे अनाथ बनकर सदा भटकते।।
जीवन की बाजी में उसकी हार हो गई ।
जिसे नशे की लत, उसकी तकदीर सो गई ।।

मादक द्रव्यों से किया जिस मानव ने प्यार ।
जीवन में रोता रहा, बिगड़ गया संसार ।।
बिगड़ गया संसार, दुःखों ने डाला डेरा।
मृत्यु से पहले मृत्यु ने उसको घेरा ।।
खिला हुआ गुलशन उसका बरबाद हो गया।
जीवन में ही जीवन मुर्दाबाद हो गया।।

सुरा और स्मैक हैं दोनों विष के नाम।
हँसते जीवन के लिए मृत्यु का पैगाम ।।
मृत्यु का पैगाम सदा उदास करेंगे।
मन की सुख-शांति का सत्यानाश करेंगे।।
इसी नशे से जीवन में अपराध पनपते।
तनाव बढ़ता, बने हुए परिवार बिगड़ते।।

प्रभु-प्रेम के नशे से कर अपना कल्याण ।
नर्क बने घर को बना, फिर से स्वर्ग समान।।
फिर से स्वर्ग समान, मिटा जीवन अंधियारा।
प्रेम और सुख-शांति का फैला उजियारा।।
आज बना, बिगड़े जीवन की नई कहानी।
आज प्राप्त कर नई जवानी, नई रवानी।।

दधीचि ऋषि जैसा तप किया जगदीश भाई ने

● ब्रह्माकुमार सुभाष, ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)

एक ऐसी हस्ती ब्रह्माकुमारी संस्थान में होकर गई जिसे हम भुलाने से भी नहीं भूल सकते। उनके गुणों का वर्णन स्वयं भगवान भी करते थे। ऊंचा कद, चमकदार चेहरा, लम्बे कदमों वाली चाल और मौलाई मस्ती में मगन उस महान हस्ती का नाम था जगदीश चंद्र हसीजा जिन्होंने 200 से भी अधिक आध्यात्मिक किताबें लिखकर लाखों लोगों के जीवन को बदलने की अनोखी सेवा कर अपना व संस्था का नाम सार्थक किया। ऐसी महान् हस्ती को मैं बार-बार नमन करता हूँ। ज्ञानामृत में प्रकाशित होने वाला नियमित स्तंभ 'संजय की कलम से' भ्राताजी की ही कलम है। प्यारे बाबा ने आपको दिव्यदृष्टि से विभूषित महाभारत प्रसिद्ध 'संजय' नाम दिया, इस नाम के अनुरूप आप दिव्यदृष्टि से सम्पन्न भी थे।

पहली बार का मिलन

मैं उनके संपर्क में तब आया जब एक बार मुरली में प्यारे बाबा ने कहा, ''जगदीश बच्चा सर्विस के प्लान अच्छे बनाता है।'' उन दिनों जगदीश भाई पाण्डव भवन के पास जो बालभवन है, वहां एकान्त में रहते थे। मैंने निश्चय किया कि आज उनसे मिलना ही है। यह बात सन् 1985 की है, तब मेरी आयु 20 साल थी। जब उनके निवास पर पहुंचा, भ्राताजी लिखने में व्यस्त थे। मैं भावविभोर हो उनको निहारने लगा, मन गद्गद् हो उठा कि वाह...यही वह महान् हस्ती है जिसे भगवान भी याद करता है...जिसे गणेश, संजय जैसे महान् उपनामों से नवाज़ा गया है। मैं उन्हें देखता ही रहा ... देखता ही रहा...। लगभग पांच मिनट के बाद उनकी दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी और मैं भूल गया कि मैं कहाँ हूँ और किसलिए आया हूँ। उन्होंने पूछा, बोलो, कुछ काम है? मैंने कहा, बस, आपसे मिलने का दिल था इसलिए चला आया। उन्होंने मुझे एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और फिर से अपना काम शुरू कर दिया। मैं उन्हें देखने का आनंद लेता रहा। उनका तेज, उनके प्रकम्पन मैं अनुभव कर रहा था। दो मिनट में अपना काम पूरा कर उन्होंने हालचाल लेना शुरू किया, पूछा, कहां से आये हो? कहाँ सेवा करते हो? मैंने कहा, रोटी विभाग में (उस समय मैं रोटी विभाग में सेवा करता था) सेवा करता हूँ। वे बोले, यह तो बहुत अच्छा है, बाबा को याद कर सेवा करने का अपना अलग ही मजा है। फिर बोले,

कुछ पूछना है? मैंने कहा, नहीं, मैं आपसे मिलकर 'भरपूर' हो गया हूँ। वो उठकर खड़े हुये और मुझे अपनी बाँहों में समेट लिया। उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो मैं इस धरा पर नहीं हूँ। उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, भैय्या, बाबा को बहुत प्यार से याद करना। अपने हाथों से मेरे मुंह में टोली डाली। वहां से विदाई लेकर बाबा की पहाड़ी पर जाकर दो घण्टे योग किया। करीब एक मास तक योग की मस्ती में मस्त रहा, जैसे उपराम अवस्था हो गई थी। उस महान योगी से मिलने का इतना गहरा असर हुआ था। इस बात का समर्पित जीवन में बहुत फायदा हुआ।

समय के पाबन्द

एक बार भ्राताजी देहली से माउँट आबू आये थे। दादीजी ने कहा, जगदीश भाई, आज मधुबन निवासियों का रात्रि क्लास 9 से 10

बजे तक हिस्ट्री हाल में आप करवाना। दादीजी की बात भ्राताजी टालते नहीं थे। वे अपने व्यस्त कारोबार में से समय निकालकर ठीक 9 बजे हिस्ट्री हाल में संदली पर बैठ गये। योग शुरू हुआ, केवल माईक देने वाला ही वहाँ उपस्थित था। क्लास में किसी की उपस्थिति ना देखकर, वे योग पूरा करके सीधा अपने कमरे में गये और कारोबार में व्यस्त हो गये। देखते ही देखते मधुबन में आवाज़ फैल गयी कि भ्राताजी क्लास में आकर वापस चले भी गये। इस बात का सबके ऊपर गहरा असर पड़ा। उसके बाद जब भी जगदीश भाई का क्लास होता, सभी 10 मिनट पहले ही क्लास में पहुंच जाते थे। इस प्रकार भ्राताजी ने दादीजी की आज्ञा का पालन भी किया और भाई-बहनों को समय पर क्लास में आने की शिक्षा भी दी। यही उनकी विशेषता थी।

निर्मानता की मूर्ति

एक बार अनूप जलोटा के पिताजी पुरुषोत्तम जलोटा अपनी विदेशी छात्राओं के साथ सांस्कृतिक प्रभाग के सम्मेलन में ज्ञानसरोवर पहुँचे थे। हारमनी हॉल में बहुत अच्छा कार्यक्रम चल रहा था। मैं सेवा पूरी कर थोड़ी देरी से हॉल की ओर जा रहा था। जगदीश भाई जी से यातायात विभाग के सामने मिलन हुआ। वे पूछ रहे थे कि यहाँ से पाण्डव भवन की दूरी कितनी है? पैदल जाने में कितना समय लगेगा? रात्रि के 10.15 बज रहे थे। मैंने कहा, भ्राताजी, रात्रि के समय पैदल जाना ठीक नहीं, मै ड्राइवर को बुलाता हूँ। तब ड्राइवर के प्रति उनके बोल सुनकर मैं हैरान हुआ। उन्होंने कहा, नहीं-नहीं, महादेव भाई को मत बुलाना। उसको प्रोग्राम देखने के लिए मैंने ही भेजा है। उसे देखने दो। ड्राइवर के प्रति इतनी सहानुभूति कौन रख सकता है? मैंने यातायात के निमित्त भाई को यह बात सुनाई, वे तुरन्त गाड़ी लेकर आये और भ्राताजी को बिठाया। इस पर भी जगदीश भाईजी कहने लगे, गाड़ी को और भरने दो। जब तक भरी नहीं, गाड़ी को रुकवा कर रखा। सच, कितनी महान भावना थी कि ये सारे मेरे परिवार के हैं, इनको भी साथ ले चलो। उनके अन्दर सबके लिए प्यार व सम्मान रहता था। सभी को साथ ले चलने और आप समान बनाने की भावना उनमें झलकती थी। यज्ञ परिवार के प्रति उनके अन्दर ज़िम्मेवारी का भाव भरा था जैसे प्रकाशमणि दादीजी के अन्दर माँ की ममता झलकती थी।

सत्यता की मूर्ति

जब वे बीमार थे तो एक बार बताने लगे, कई भाई-बहनें पूछते हैं, बाबा आपको बीमारी में मदद क्यों नहीं करता। मैं उन्हें बताना चाहता हूँ, बाबा हर कदम मुझे आगे बढ़ाते थे। हर अनुभव मुझे कराते थे। प्यारे बापदादा ने कई बार मुझे इशारा दिया, बच्चे, तबीयत का ध्यान रखो, समय पर खाया करो, समय पर सोया करो लेकिन मुझे तो भगवान की सेवा में हड्डी-हड्डी स्वाहा करनी थी। मैं शरीर का ध्यान रखता ही नहीं था। बस, बाबा ने जो कहा, उसमें तन-मन से सम्पूर्ण रूप से लग जाता था। मज़ा भी आता था। मैंने तो मज़ा लिया है लेकिन इस कारण मेरे शरीर के अन्दर की रचना में बदलाव आ रहा है, यह मुझे पता ही नहीं चला। आयु के ढलते ही उसने विकराल रूप धारण कर लिया, उसमें तो मैं दोषी हूँ। बाबा ने तो कई बार सावधानी दी लेकिन मैं मानता ही नहीं था, मैं बाबा को कैसे दोष दे सकता हूँ।

अन्तिम समय की यादें

एक दिन उनकी तबीयत बहुत खराब थी। उस दिन अर्जुन दादाजी के पार्थिव शरीर को मधुबन के चारों धामों की यात्रा कराई जा रही थी। जगदीश भाईजी ने भी अपना कंधा उनकी अर्थी को दिया और पैदल चल पड़े। सभी ने उनको मना किया, भ्राताजी, आप आराम करो, हम लोग जा रहे हैं। तब उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर महान हस्ती अर्जुन दादा को नमन किया और कहा, धन्य हो दादा, आपने अन्तिम श्वास तक अपनी हड्डी प्रभु की सेवा में लगायी। यह देख सभी सोच रहे थे कि दादा की विशेषता देख

कर भ्राताजी उन्हें कितना सम्मान दे रहे हैं। हमें भी सबको ऐसा ही सम्मान देना चाहिए।

आज्ञाकारी

मधुबन निवासियों के प्रति जगदीश भाईजी की अंतिम क्लास का दिन था। प्रकाशमणि दादीजी स्वयं जगदीश भाई को साथ लेकर आ रही थी, जैसे माँ अपने छोटे बच्चे को अंगुली पकड़ कर ला रही हो। वे काफी कमज़ोर नज़र आ रहे थे। उनके बोल भी बहुत धीमे-धीमे निकल रहे थे। उन्होंने कहा, मैं क्लास कराने नहीं, अपने प्यारे परिवार से मिलने आया हूँ, दादी जी की आज्ञा कैसे टाल सकता हूँ, आप देख ही रहे हो मेरी तबीयत। उन्होंने वैराग्य वृत्ति पर प्रकाश डाला और अन्त में कहा, हमने अपना एक-एक सेकण्ड व एक-एक हड्डी प्रभु के यज्ञ में लगाने की कोशिश की। मुझे जाने का गम नहीं, एक दिन तो सभी को जाना ही है लेकिन एक काम आपके लिए छोड़ के जा रहा हूँ। मैंने बहुत कोशिश की, मै कर नहीं पाया। मै अपने आप को शर्मिन्दा महसूस कर रहा हूँ। बाबा ने हमें इतना सब दिया लेकिन उनकी छोटी-सी आश पूरी नहीं कर पाया। आप पूरी करोगे? सभी ने कहा, हाँजी भ्राताजी। वे बोले, बस, मैं शिवबाबा को प्रत्यक्ष नहीं कर पाया.....इसके आगे वो बोल नहीं पाये, उनका दिल भर आया। माईक हटा दिया गया। सभी क्लास वालों को उन्होंने दोनों हाथों से नमस्कार किया। सभी का भी दिल भर आया। प्यारी दादीजी ने उनको बाँहों में समा लिया जैसे एक माँ अपने बच्चे को समा लेती है। सभी की तरफ से दादीजी ने हामी भराई कि हम बाबा को प्रत्यक्ष अवश्य करेंगे। मधुबन में एक नई चेतना-सी आयी।

वो दिन आ ही गया

मैं लौकिक घर सेवार्थ गया था। मुझे मेरे बड़े भाई ने फोन पर समाचार दिया कि जगदीश भाईजी....और वो आगे बोल नहीं पाये... मै दो मिनट के लिए शान्त हो गया, उन्हें दिल से नमन किया और सोचा, दधीचि समान हड्डी-हड्डी सेवा में लगाने वाले, एक-एक श्वास यज्ञ-सेवा में समर्पित करने वाले भ्राताजी के अन्तिम दर्शन कर पाऊँगा? मैं जनरल टिकट लेकर तुरन्त बान्द्रा स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर पहुँचा, बाबा के बच्चे नज़र आने लगे। वहीं एक भाई मिले और कहा, आप मेरे साथ बैठना, आपकी टिकट मेरे पास है। मैंने देखा उस महान हस्ती के नाम से रास्ते अपने आप बनते जा रहे थे। पूरे रास्ते उनकी जीवन-गाथा नयनों के सामने आ रही थी। भोली दादीजी का संदेश आता था, जगदीश भाई देहली से आये हैं,उनका ध्यान रखना। मधुबन में भ्राताजी को कुछ समय भोजन परोसने का सौभाग्य मिला था, ब्रह्मा भोजन के प्रति उनका प्यार, सम्मान और बाबा की याद की मस्ती में एकान्त में भोजन करने का अलौकिक आनंद लेते हुये इस आत्मा ने उन्हें कई बार देखा था। ब्रह्मा भोजन में कभी नुक्स नहीं निकालते थे। धन्यवाद करना कभी भूलते नहीं थे।

अन्तिम नज़ारा

श्मशान भूमि मानो एक मेला बन गया था। चारों तरफ सफेद ही सफेद वस्त्रधारी। खड़े होने तक की जगह नहीं थी। बड़ी संख्या में ब्राह्मण परिवार वहाँ पहुँचा था अपने नायक को अन्तिम विदाई देने के लिए। स्वयं दादी प्रकाशमणि अपने हस्तों से उस महान हस्ती को मुखाग्नि देने आयी थी। पार्थिव शरीर भले ही पाँच तत्वों में विलीन हो गया लेकिन आज भी वो हमारे बीच किताबों के रूप में रहते हैं। महेश भाई उनके साथ काम करते थे। वे कहते हैं, पूरे संगम तक काम चलेगा इतनी सेवा मुझे देकर गये हैं। हर रोज भ्राता जगदीश जी से कभी उनकी लेखनी के माध्यम से, कहीं उनकी सेवायोजना के माध्यम से, कहीं उनके प्रवचनों के रूप में उनसे अव्यक्त मिलन करते ही रहते हैं। ❖

पुण्य आत्मा वही है जो शान्ति से, बिना दिखावे के सेवा करता है और सेवा की आवश्यकता वाले स्थान पर आपेही पहुँच जाता है।

सशक्त कलम

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

30 मई, 1826 को प्रथम पत्र 'उदंत मार्तण्ड' के प्रकाशित होने के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत हुई। इसलिए यह दिवस हिन्दी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

मानवीय कमजोरियों को छेदने की ताकत

छोटे बच्चे जब स्कूल जाने लगते हैं, अपनी पाठ्यपुस्तकों को सरस्वती का रूप मानते हैं। भूल से भी पाँव लग जाये तो माथे से लगा लेते हैं। पुस्तक ही क्यों, कोई भी छपा हुआ कागज़ उनके लिए पूजनीय है। बड़ों के लिए भी छपा कागज़ सरस्वती तुल्य है। अत: छपे हुए कागज़ का निष्पक्ष, सत्य, प्रेरणादायी तथा प्रेमभाव बढ़ाने वाला होना जरूरी है। किसी मूल्य को, सद्गुण को उजागर करती हुई कोई भी छोटी-सी घटना भी समाज के लोगों की धारा बदल सकती है। साहित्य समाज का दर्पण है और दिशासूचक भी। जनकल्याण की स्याही में डूबोकर, नम्रता और सत्यता से उकेरे गये शब्दों में, मानवीय कमजोरियों को छेदने की ताकत गोली की मार से भी अधिक होती है। यह कलम की ताकत ही है कि वह शान्ति के मधुर राग के साथ अपने या दूसरे के भीतर की विकृतियों, अंधविश्वासों, पूर्वाग्रहों, नफरतों, अशुभ भावों को खींचकर बाहर ले आती है और एक ऐसी तड़प पैदा करती है कि व्यक्ति उनसे छुटकारा पाए बिना चैन से रह नहीं पाता है।

पुस्तक से मिली प्रेरणा

बात उन दिनों की है, जब मैंने हिन्दी पढ़ना अच्छे से सीख लिया था और जो भी पुस्तक मिलती, उसे पढ़कर अपने आत्मविश्वास को दृढ़ कर लिया करती थी। इधर-उधर पुस्तकों की खोज करने के प्रयास में एक बार घर की रद्दी में पड़ी हुई एक पुस्तक हाथ लगी जिसका प्रारंभ और अंत गायब था, बीच के पिन लगे कुछ पन्ने थे। उसे पढ़ना प्रारंभ किया तो लगा कि यह किसी देशभक्त जासूस की कहानी है। जितना हिस्सा मेरे हाथ लगा, उसका सारांश यह था कि एक देशभक्त भारतीय जासूस पड़ोसी देश के जासूसों द्वारा पकड़ लिया गया है। उसे बांधकर वे उससे भारतीय खुफिया ठिकानों की जानकारी चाहते हैं। न बताने पर उस भारतीय जासूस पर भारी अत्याचार करते हैं। अत्याचार सहते-सहते जब वह कराहने लगा तो बोला, बताता हूँ। यह सुनकर मारने वालों के हाथ रुक गये और चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी। सभी एक साथ चिल्लाए, बताओ, जल्दी बताओ। देशभक्त ने थोड़ा अपने को संभाला, फिर पूछा, बताऊँ? उत्तर मिला, बताओ। उसने निर्भयता से कहा, तुम सब उल्लू के पट्ठे हो।

आगे क्या हुआ, मालूम नहीं, आगे के पन्ने नदारद थे पर उस देशभक्त के ये अंतिम निर्भयता भरे शब्द सुनकर मेरे शरीर में बिजली-सी दौड़ गई। उस समय आयु 9 वर्ष रही होगी। उस बाल अवस्था में मुझे अंधेरे से भय लगता था। रात होने के बाद, यदि बिजली न हो तो कमरे में जाना, अकेले छत पर जाना किसी भयंकर मुसीबत में फँसने जैसा लगता था। इस अधूरी किताब ने ज़िन्दगी की इस कमी को पूरा कर दिया। इसको पढ़ते-पढ़ते रस्सों से बंधे, मार खाते हुए फिर भी निर्भयता से उत्तर देते हुए देशभक्त की तस्वीर मन:पटल पर स्थिर हो गई। फटी किताब रख देने के बाद भी वह तस्वीर वहाँ से हटी नहीं। इसके बाद मैं अंधेरा होने का बेसब्री से इंतजार करने लगी कि आज मैं भी अंधेरे को इसी बहादुरी से उत्तर दूँगी। रात हुई, कमरों में लाइट जलने लगी। अंदर के स्टोर जैसे कमरे में अब भी अंधेरा था। मैं दौड़कर वहाँ गई, कई चक्कर लगाए और मन ही मन कहा, अरे अंधेरे, तुम तो कुछ भी नहीं हो,

तुम्हारी असलियत मैं आज जान पाई। फिर मैंने लाइट जलाई और मानो तिरस्कृत अंधेरे का मैंने अंतिम संस्कार कर उसका नामोनिशान भी मिटा दिया।

मुझे निर्भयता जैसा अमूल्य गुण देने वाला, इस पुस्तक का लेखक कौन है, मन में प्रश्न उठा पर पुस्तक का आगा-पीछा था ही नहीं, जानूँ कैसे? मैंने उस अनजाने लेखक को ढेरों दिल की दुआयें दीं और आज भी दे रही हूँ।

मानसिक कुपोषण

आज संचार साधनों में क्रांति आई है और बढ़ी हुई जनसंख्या के मद्देनजर सूचना-तंत्र के त्वरित और विस्तृत होने की आवश्यकता भी है। परंतु जैसे पौष्टिकता विहीन खाद्य से भूखी जनता का पेट भर देने पर भी कुपोषण बना ही रहता है इसी प्रकार अनेक प्रकार की सूचनाओं से लैस होते भी जनसामान्य मानसिक कुपोषण का शिकार है। अंदर विचार हैं पर कुपोषित हैं, उन्हें सशक्त करने के लिए मूल्यों से सशक्त कलम चाहिए।

उठकर ही उठाया जा सकता है

सर्वक्रांतियों में सर्वश्रेष्ठ है विचार-क्रांति। समाज को नये विचार कौन देता है? शिक्षक तो पढ़ा हुआ पढ़कर सुना देता है। राजनीतिज्ञ भी बहुत बार अन्य का लिखा भाषण पढ़ जाते है पर समाज की सामयिक स्थितियों की दिशा या दिशाहीनता पर से परदा कौन उठाता है? अवश्य ही कलम के सिपाही। इसलिए लेखकों को, पत्रकारों को अपना मनोबल बनाये रखना है। हमारी लिखी इबारत को दूसरे ने पढ़कर वाहवाही लूटी, हमें खुश होना चाहिए। दूसरे के कंधे चढ़कर नाम कमा रहा है तो क्या हुआ, बेटा तो हमारा ही है। हमारे विचार हमारी रचना हैं, जैसे हम होंगे, वैसे हमारे विचार होंगे। जैसे विचार होंगे, वैसे हम होंगे। दोनों एक-दूसरे के दर्पण हैं। सशक्त विचार देने के लिए खुद को सशक्त बनाइये। स्वयं थमा हुआ ही दूसरे को थाम सकता है और स्वयं उठकर ही दूसरे को उठाया जा सकता है।

बिना साधनों के प्राप्तव्य

भले ही इलैक्ट्रोनिक मीडिया के हाथ लंबे हैं परंतु जितने लंबे हैं उतने ही फिसलने भी हैं। टी.वी. का दृश्य आपके आँख, कान को एक झलक दिखाकर ओझल हो जाता है पर मुद्रित चीज़ें सालों साल सहेजी जा सकती हैं। एक नन्हीं-सी चोपड़ी दादे से लेकर पोत्रे के जीवन-सफर तक साथ देती है, प्रेरित करती है। मुद्रित चीज़ बिना किसी लाइट के या किसी यंत्र के भी, हाथ की पहुँच में बनी रहती है। जब चाहे पढ़ी-गुनी जा सकती है। साधनों के बिना भी हर समय, हर स्थिति में प्राप्तव्य है। साधनों पर आधारित इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का अपना क्षेत्र और अपना महत्व है, वह भी प्रशंसनीय है पर उसकी चकाचौंध में मुद्रित माध्यमों को अपनी आँखें चौंधियाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

बेहद के सत्यों को उजागर करे कलम

कलम की नींव हज़ारों वर्ष पुरानी है। जंगलों के एकांत स्थानों पर तपस्यारत ऋषि-मुनियों ने 2500 वर्षों तक सृष्टि को थमाने और भक्ति मार्ग को चलाने के लिए जो सत्य, कलम से उकेरे थे, आज भी मौजूद हैं। पर आज हमें एक नये युग का सूत्रपात करना है तो उन अवहेलित सत्यों की जानकारी की आवश्यकता है जो वास्तव में एक परमात्मा की ही बपौती हैं। उन्हीं सत्यों के उद्घाटन के कारण उसे कहा गया, परमात्मा सत्य है। वो मानव की पहुँच से परे की सत्य बातें उद्घाटित करता है, इसलिए सत्य है। नवयुग के सूत्रपात के लिए वो इस समय धरा पर अवतरित है और उस द्वारा सुनाये गये अनेक सत्यों में से एक सत्य यह भी है कि नवयुग निर्माण में मीडिया सबसे बड़ी ताकत है, पर तब जब वो अल्पकालिक, सीमित सत्यों के साथ-साथ बेहद के सत्यों को भी जन-जन तक पहुँचाए। कलम ऐसी

तब बनती है जब उसे चलाने वाला कमल समान पवित्र, न्यारा, कीच से अछूता और सांसारिक आकर्षणों से उपराम हो, ऐसी कलम ही विश्व परिवर्तन का कमाल कर सकती है।

मीडिया के भी हैं नैतिक दायित्व

पत्रकारिता से जुड़े कई लोग कहते हैं कि वे प्रचारक नहीं है। घटना को उसी रूप में प्रस्तुत करते हैं जैसी देखी और महसूस की है। परंतु मीडिया कभी अपने लिए नहीं जीता। इसका अस्तित्व सामाजिक संस्कारों के लिए है। यही सरोकार उसकी भूमिका को अधिक दायित्वपूर्ण बना देते हैं। मीडिया शून्य में काम नहीं करता। इससे अपेक्षायें भी हैं और इसके नैतिक दायित्व भी हैं। जहाँ कोई भी बात, समाचार या विचार हजारों, लाखों तक एक साथ पहुँच रहा हो, वहाँ निश्चित रूप से स्वविवेक, आत्मनियंत्रण तथा सर्वहिताय के अमूर्त सिद्धांत को सामने रखना लेखक, पत्रकार का नैतिक दायित्व है।

जरूरी है मूल्यों का स्तंभ

कर्म के साथ फल बंधा हुआ है। कलम चलाना भी एक कर्म है, कर्म है तो फल भी है। मैंने कलम चलाई माना बीज बोया, उस बीज से किसी पर क्या बीती? यदि वह बीज ऐसा है, उसने किसी की एकाग्रता भंग की, झूठे सब्जबाग दिखाए, शरीरों को महामण्डित किया, शरीरों की भाव-भंगिमाओं का वर्णन कर किसी मन को उलझाया, फंसाया, मनोवृत्ति को चंचल बनाया, मानवीय कमजोरियों को सजा-धजा कर परोसा, चारित्रिक दोषों को अवहेलित किया तो अवश्य ही कमज़ोर बीज बोया। यह समय कमज़ोर मानवता को कमज़ोरी की घूंटी पिलाने का नहीं है बल्कि उसकी हिलती काया को स्थिरता देने का है। इसलिए कांपती मानवता को मूल्यों के स्तंभों से थामिए, कलम को कालाधीन नहीं, कालजयी बनाइये। ❖

आत्महत्या से आत्मबल की ओर

ब्रह्माकुमार महावीर, चाँदहट, पलवल(हरियाणा)

मेरे माता-पिता जी पिछले 22 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में हैं। बचपन में मैं कभी-कभी ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर जाया करता था लेकिन बड़ा होकर कुसंग में फंसकर शराब पीने लगा और कई प्रकार के बुरे कर्म करने लगा। कोई ऐसा बुरा कर्म नहीं है जो मैंने ना किया हो।

एक दिन लड़ाई झगड़े में मेरे पाँव में चोट लग गई और सात दिनों के बाद पाँव अचानक टूट गया। मुझे बहुत दु:ख हुआ। लगातार छ: महीने मैं बिस्तर पर रहा, मेरा एक दोस्त भी मुझे देखने नहीं आया। मैं और ज्यादा दु:खी हो गया। बिस्तर पर दिन-रात पड़े-पड़े रोता ही रहता। जिंदगी बोझ लगने लगी। आत्महत्या करने का विचार चल पड़ा। तभी मेरी माता जी ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग सेवाकेन्द्र से मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनकर आई। उनके हाथ में भी ईश्वरीय शिक्षाएँ लिखे हुए कुछ पन्ने थे। माँ ने मुझसे कहा, बेटा, रो मत और आत्महत्या का विचार न कर, बाबा तेरी अवश्य मदद करेगा, वो सब का साथी है। मैंने मुरली पढ़ी, पढ़ते ही मुझे पता चला कि यह तो मेरे ही बुरे कर्मों का फल है, इसमें किसी का भी कोई दोष नहीं है। इस प्रकार मुझे आत्मबल मिला। इसके बाद मैं रोज़ घर पर मुरली पढ़ने लगा। दो महीने बाद मेरे पांव में आराम हो गया। फिर मैं रोज़ अपने गांव में ही ईश्वरीय क्लास में जाने लगा। प्यारे शिवबाबा की मुरली ने मुझे जीवनदान दे दिया। अब मैं और मेरी पत्नी भी रोज़ सेवाकेन्द्र पर जाते हैं।

शिवबाबा ने मुझे नया जीवन दिया है। मैं पूरी धारणाओं के साथ ज्ञान-योग में चल रहा हूँ। मेरा नया जीवन शिवबाबा की अमानत है। मैंने अपना तन-मन शिवबाबा को अर्पण कर दिया है। बाबा ने अनेक बार मेरी मदद की है। मेरे पास शिवबाबा का धन्यवाद करने के लिए शब्द नहीं हैं। ❖

शरीर से न्यारा होने की अनुभूति

● डॉ.सुशीला चौधरी, शिशु रोग विशेषज्ञ, जोधपुर

बात सन् 1994 की है, सिरोही जिले के कालन्द्री गाँव में मैं व मेरे पति दोनों चिकित्सक रूप में सरकारी अस्पताल में सेवारत थे। उस दिन घर की छत के जाले आदि स्टूल पर चढ़कर हटा रही थी कि अचानक पेट और छाती के बायीं तरफ असहनीय दर्द हुआ। मैं गश खाकर गिरूँ और शरीर को चोट लगे, इससे बेहतर (तुरंत निर्णय लेते हुए) मैंने शरीर को पास ही सटे डबल बेड पर गिरा दिया और अपने युगल को पुकारा।

मेरा वो पारदर्शी अस्तित्व

इसके तुरंत बाद लगने लगा, मैं एकदम हल्की हो गई हूँ, किसी भी तरह का दर्द, तकलीफ नहीं है पर स्वयं के शरीर को बिस्तर पर निश्चेत (प्राणहीन-सा) पड़ा हुआ देख रही हूँ। मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि मैं एक से दो कैसे हो गई। मैं अपने आप को (अस्तित्व को) जमीन से लगभग 5-6 फीट ऊँचाई पर महसूस करने लगी। असमंजस से निकलने के लिए मैं कमरे में रखी काँच की अलमारी के सामने जाकर देखने लगी कि अगर मैं पलंग पर हूँ तो, जो मैं यहाँ हूँ, वह कौन है। काँच में से सामने की वस्तुयें तो दिखाई पड़ रही थी पर मैं दिखाई नहीं पड़ी। शायद मेरा वो अस्तित्व पारदर्शी था इसलिए दर्पण में मेरी कोई आकृति मुझे नज़र नहीं आई। मैं आश्चर्यचकित होकर पुन: शरीर के पास पहुँची और संकल्प चला कि यह स्थिति क्यों पैदा हुई, कौन मुझे बतायेगा?

अपूर्व शान्ति व हल्कापन

अचानक मुझे लगा कि ऊपर से कोई अदृश्य शक्ति मुझ से संपर्क जोड़ रही है और कहती हुई महसूस हो रही है, क्या तुम इन सबकी वजह जानना चाहती हो? मेरे हाँ कहने पर मुझे लगा कि मेरे सामने जो शरीर पड़ा है, वह पारदर्शी चमड़ी से ढका है और मैं उसके अंदर के सभी अंगों को भली-भाँति देख सकती हूँ। तब मुझे दिखाई दिया कि इस शरीर में जो हृदय है, वह ठीक काम नहीं कर रहा है। उसके धड़कने की गति इतनी तेज हो गई है कि वह सिर्फ कंपन करता दिखाई दे रहा है। संकुचन और फैलाव जैसा होना चाहिए, वैसा नहीं हो रहा है। मैं समझ गई कि यह पी.एस.वी.टी. (एक प्रकार का धड़कन संबंधी हृदयरोग जो अज्ञात कारणों से किसी-किसी को कभी भी हो सकता है) हो गया है। इसकी वजह से रक्त संचरण में दिक्कत हुई तो मुझे दर्द महसूस हुआ। दर्द असहनीय था इसलिए मैंने इस शरीर को त्याग दिया है और इस (पारदर्शी) अवस्था में आ

गई हूँ, ऐसा करने का अभ्यास मुझे पहले से है। यह समझने के बाद मैं पूर्णतया संतुष्ट हो गई और सोचा कि जब यह शरीर खराब हो गया है तो मुझे यहाँ से चलना चाहिये पर कहाँ, यह मालूम नहीं। उस समय किसी प्रकार का लगाव, मोह, भय नहीं था बल्कि अपूर्व शान्ति व हल्कापन था जिसने मुझे पूर्ण आनन्द से भर दिया।

अदृश्य शक्ति का आदेश

जैसे ही मैंने वहाँ से चलने का निश्चय किया, अचानक उस अदृश्य शक्ति का आदेश फिर महसूस हुआ – 'नहीं, तुम यहीं ठहरो।' अब मुझे लगा कि यह जो कुछ हो रहा है, वह किसी के द्वारा नियंत्रित भी किया जा रहा है। मैं एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह वहीं ठहर गई। फिर देखती हूँ कि बहुत घबराये हुए मेरे युगल, मेरे शरीर पर चिकित्सकीय प्रयास कर रहे हैं। उन्हें इस हालत में देखते हुए भी मुझे आश्चर्य के संकल्प आ रहे थे कि अरे, ये कितने नासमझ हैं, जो शरीर

को कह रहे हैं, हाथ उठाओ, जीभ निकालो, आँखें खोलो, क्या इन्हें दिखाई नहीं पड़ता कि जब मैं (चेतना) यहाँ हूँ तो शरीर ये सब कार्य कैसे कर सकता है। पर स्वयं के बारे में इससे अधिक स्वयं मुझे भी जानकारी नहीं थी।

शरीर से बाहर बहुत अच्छा लग रहा था

कुछ पल बीतने पर मेरे युगल के चेहरे पर रौनक दिखाई दी। मैंने उन्हें देखकर सोचा कि अब क्या हुआ जो ये इतना खुश हो रहे हैं? मेरा शरीर मुझे फिर पारदर्शी त्वचा से ढका हुआ दिखने लगा और मैंने देखा कि अब हृदय सामान्य धड़कन से कार्य कर रहा है। मेरे मन में आया, अच्छा यह मशीन ठीक हो गई। वही अदृश्य शक्ति फिर जैसे कह रही थी, अब तो इस शरीर के कार्य से तुम संतुष्ट हो? मैंने कहा, हाँ। तो अचानक शब्द सुनाई पड़े, तो जाओ। और अगले ही पल मुझे लगा कि मैं शरीर धारण कर बिस्तर पर बहुत कमजोर, थकी हुई पड़ी हूँ और होंठ हिलाकर यह पूछने की भी शक्ति मुझमें नहीं है कि किस वजह से मुझे पुन: शरीर रूपी कैद में डाल दिया गया। मुझे इसमें नहीं रहना। मुझे बाहर बहुत अच्छा लग रहा था, मुझे वैसे ही रहने दो।

मृत्यु-भय जा चुका था

स्वस्थ हो जाने पर मैंने इस घटना की सत्यता परखने के लिए गीता, शिवपुराण, बाइबिल, कुरान, विदेशी लेखकों की जन्म-मरण से संबंधित पुस्तकें पढ़ डालीं पर सटीक विवेचन कहीं नहीं मिला। इतना समझ में आ गया कि मैं आत्मा सब कुछ करने वाली इस शरीर में कैद हूँ और मुझे उस विधि को तलाशना है जिससे मैं स्वयं जब चाहूँ तब अशरीरी अवस्था में जा सकूँ। वो आनन्द, शक्ति, हल्कापन मुझे हर घड़ी याद आता और आकर्षित करता। अब मृत्यु शब्द से भय जा चुका था, लगने लगा कि मरना तो बड़ा आनन्द का क्षण है, जो हमें सब बातों से मुक्त कर देता है। चिंतन चलते-चलते 6-8 मास गुज़र गये।

लाल प्रकाश के क्षेत्र में प्रवेश

एक सुबह तीन-चार बजे होंगे, खिड़की से बाहर चाँदनी रात का नज़ारा दिख रहा था। अचानक लगा कि मैं, मेरे युगल और बच्ची आबू घूमने गये हैं। फिल्म की तरह दृश्य दिखाई देने लगा। तभी अचानक देखती हूँ कि प्रकाशमान सितारे जैसी मैं पूरे शरीर में चक्कर लगा रही हूँ और फिर मस्तक से बाहर निकलकर आकाश की तरफ तेज़ी से जा रही हूँ। रोशनी, नज़ारे सब पीछे छूट गये हैं और मैं एक गहरी अंधेरी सुरंग में से गुज़र रही हूँ। मैं थोड़ा सहम जाती हूँ पर रुकती नहीं और पहुँच जाती हूँ एक मद्धम, लाल प्रकाश के क्षेत्र में, मुझे वहाँ चैन आता है पर तभी कोई रोशनी की किरण मुझे गाइड करती है और मैं निर्देशित स्थान पर बैठ जाती हूँ। वहाँ लग रहा था कि मैं और अन्य लोग सितारे का रूप धरकर यहाँ बैठे हैं। देखने में सितारे रोशनी के हैं पर मैं उन्हें पहचान रही हूँ कि अमुक मेरी माँ है, बहन है, सखी है आदि-आदि। तभी देखती हूँ कि सामने एक बहुत प्यारी-सी रोशनी है, उसकी चमक इतनी सुंदर है कि जुबां से बयां नहीं कर सकते। उससे नज़र हटाने को जी नहीं चाहता, वह सिर्फ रोशनी नहीं है, उससे जैसे अपनत्व, शान्ति, शीतलता और जाने क्या-क्या बहकर हम सब तक पहुँच रहा है, वही सब पाने के लिए हम यहाँ हैं। तभी मुझे ख्याल आता है कि मैं इस रोशनी के और करीब चलूँ। स्कूल में मुझे कक्षा में पहली पंक्ति में बैठने की आदत थी, मैं देखती हूँ कि यहाँ मैं तीसरी पंक्ति में बैठी हूँ और जो जितना पीछे बैठा है, उसकी खुद की चमक भी फीकी है, उनको आगे वाली रोशनी का आनन्द भी कम महसूस हो रहा है, मैं सोचती हूँ, मुझे पहली लाइन में जाकर बैठना है।

पढ़ाई करने का आदेश

तभी सामने वाली खूबसूरत सितारे जैसी रोशनी से शब्द मुझ तक आते हैं, पहली लाइन में बैठने के लिए

पढ़ाई करनी होगी। मैं एकदम आश्चर्य में भर जाती हूँ कि यह तो वही शक्ति है, परिचित-सी जिसने मुझे पहले भी शरीर में जाने, न जाने संबंधी निर्देश दिये थे। मैं खुशी से भरकर कहती हूँ, मैं तो पढ़ने की बहुत शौकीन हूँ, इतनी पढ़ाई की, डॉक्टर बनी, और कौन-सी पढ़ाई पढ़नी है? मुझे बस आपके करीब आना है, मुझे पढ़ाई पढ़ना मंजूर है, तो तुरंत ही जैसे कहा, जाओ और सारा दृश्य खत्म हो गया। मैं पलंग पर बैठी हैरान हो रही थी कि अब कौन-सी पढ़ाई मुझे उस रोशनी के करीब जाने के लिए पढ़नी है।

नये ज़माने के संन्यासी

इस समय (1996) तक मैं ब्रह्माकुमारीज़ के केवल नाम से परिचित थी कि कोई धार्मिक संस्था है, वहाँ नये ज़माने के तरीके से लोग संन्यासी होकर रहते हैं, शादी नहीं करते हैं। डॉ. सविता बहन (मधुबन) मेरी एम.बी.बी.एस. की सखी और सहपाठी रही है, वह संस्था में समर्पित है। उनसे ही औपचारिक मुलाकातों में मुझे कुछ जानकारी मिली थी। नये ज़माने के संन्यासी इसलिए लगते थे कि परंपरागत तरीके से उन पर वैज्ञानिक सुविधाओं का इस्तेमाल न करने का प्रतिबंध नहीं था। मुझे यह व्यवस्था पसंद आई थी। इन्हीं दिनों मेरा पीहर (जोधपुर) आना हुआ। मुझे पता चला कि पिछले तीन-चार साल से मेरी छोटी बहन रेणु ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से अत्यधिक जुड़ चुकी है, वहाँ समर्पित होना चाहती है और इस संबंध में घर में विरोधाभास चल रहा है। माँ ने कहा, तुम इसे समझाओ, शादी नहीं करना चाहती, ब्रह्माकुमारी बनना चाहती है, पता नहीं कैसी संस्था है, जीवन कैसे बीतेगा आदि-आदि।

क्या मेरा और ब्रह्माकुमारीज़ का भगवान एक ही है?

बातचीत के दौरान रेणु बहन ने मुझे ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स कराना प्रारंभ कर दिया। सुनते-सुनते मुझे लग रहा था कि ये सब सत्य बातें हैं, मैं इसका अनुभव कर चुकी हूँ। अवश्य ही मुझे भी इनके विस्तार में जाना चाहिए। बस, एक बात का विश्वास नहीं हो रहा था कि क्या गारंटी है, जो मेरे वाला भगवान है, वह केवल ब्रह्माकुमारी संस्था में ही अवतरित होकर ज्ञान दे रहा है, यह कैसे साबित हो क्योंकि आजकल तो हर कोई अपने पास भगवान के आने का दावा करता है।

सबका परमपिता एक है, साबित हो गया

सन् 1997 में डॉक्टर्स सम्मेलन में हमारा आबू आना हुआ। इस बार मैं मन में अपने भगवान को चुनौती देकर आई थी कि अगर आप धरा पर सचमुच इसी विश्व विद्यालय द्वारा कार्य कर रहे हैं तो मुझे अपना सबूत दो वर्ना इस संस्था में इस आशय से फिर घड़ी-घड़ी नहीं आ पाऊँगी। मुझे सबूत मिल गया। सम्मेलन के आखिरी दिन पांडव भवन में सुबह की मुरली क्लास में जाने का सौभाग्य मिला। मुरली सुनकर 'सबका परमपिता एक ही है' और वह यहाँ आकर ही सबको नवयुग निर्माण की शिक्षा दे रहा है, साबित हो गया। उसी अदृश्य परिचित शक्ति के शब्द, मुरली आरंभ होने से पहले ही मुझ आत्मा (विशेष मुझे ही) को संबोधित करते हुए दादी निर्मलशान्ता के मुख से सुनाई पड़े। मुझे लगा, मैं पांडव भवन में नहीं, परमधाम में बैठी उस पढ़ाई वाली बात को अब समझ रही हूं। खुशी, प्यार, आनन्द की अनुभूति, जो विदेही होने पर हुई थी, इस घड़ी देह में रहते हो रही थी, सब कुछ स्पष्ट हो गया था। सब संशय मिट गये थे, आँखें खुशी के आँसुओं से भर गईं और उसी क्षण सारी धारणायें जीवन में उतारने को कृतसंकल्पित हो गई। सेकंड में जीवनमुक्ति मुझे प्राप्त हो गई।

उस दिन से आज तक बाबा हर घड़ी साथ जुड़ा हुआ दिखाई देता है। बुद्धि हर वक्त उस बाबा से ही बातें करती है। हर कार्य में, 'बाबा, इसे आप भी देखो', कहकर ही जीवन चल रहा है और चलता रहेगा। ❖

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर विशेष...

पशुत्व के प्रतीक दो जहर

● ब्रह्माकुमार बादल सिंह गहरवार, शान्तिधाम, रीवा

नशे और वासना में मनुष्य को पशु बनाने की बड़ी नकारात्मक शक्ति है। इनसे इंसान आसानी से पशुता की ओर बढ़ चलता है। नशा इंसान को बेहोश करता है और वासना अंधा।

ये दोनों हमारे अंदर की बर्बरता को उभारते हैं एवं हमें अंतहीन प्यास के मुकाम पर ऐसा खड़ा करते हैं कि कभी तृप्ति मिल ही नहीं पाती। अंतर की इच्छा भोग के साथ भड़कती ही रहती है। नशा उतरने पर कुछ पल के लिए यदि ज़मीर जागे भी तो शाम को फिर सारे श्रेष्ठ संकल्प धूल-धुसरित हो जाते हैं और उसके भीतर व्यक्ति नहीं, नशा बोलने लगता है। ठीक यही कहानी वासना की है। कामुक व्यक्ति का कोई रिश्ता नहीं होता। उसका मलिन मन तो बस एक ही रिश्ता ढूंढता है और वह है कामुकता का। वासना तो कुत्ते के मुँह में सूखी हड्डी के समान है। दाढ़ से रिसते लहू को हड्डी का स्वाद मानकर, नासमझ कुत्ता चबाता चला जाता है। आँकड़ों के आइने में देखें तो नशे एवं वासना ने मासूम किशोरों को अपने चंगुल में कर लिया है। जिन्हें ज़िंदगी के सही मायने नहीं मालूम, वे आज इस सर्वनाशी दौड़ में बहुत आगे बढ़ चुके हैं। पता नहीं यह अंधी दौड़ कहाँ ले जा कर छोड़ेगी।

भुला दिया गया है मूल्यवानों का मूल्य

हम इन्सान हैं, इसे भुला देता है नशा। हमें पतित करती है वासना, इसलिए इसके लिए मर्यादाओं की सीमाएँ खींची गई थीं परन्तु आज सारी सीमाएँ टूट चुकी हैं। इस टूटन का भयानक परिणाम सामने आ रहा है। कभी चरित्र, शील, मर्यादा, अनुशासन आदि व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्य हुआ करते थे पर आज इन मूल्यवानों का मूल्य समझा नहीं जा रहा है। नशा तो खून की होली है जिसे हम अपने ही खून से खेलकर सर्वनाशी उत्सव मना रहे हैं। कैसे यह सब रुकेगा, कौन इसको रोकेगा? आखिर कौन है जो षड्यंत्र रच रहा है जिस कारण प्राकृतिक प्रदूषण के साथ-साथ नैतिक प्रदूषण भी संक्रामक रोग के समान फैलता चला जा रहा है।

आदर्श को प्रतिष्ठा मिले तो नकारात्मकता कमज़ोर पड़े

आज व्यक्ति और समाज, दोनों भीषण मनोरोग से आक्रांत हैं। ध्यान रहे, गलत तरीके से कभी भी श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना संभव नहीं है। इसके लिए उच्चतर प्रक्रियाएँ अपनानी पड़ेंगी और वे भी दृढ़तापूर्वक। चूँकि आज समाज में धन के साथ इन्हीं चीज़ों को प्रतिष्ठा मिल रही है इसलिए इनकी गति तीव्रतर एवं तीव्रतम है। यदि समाज में आदर्शवादी बातों जैसे- ज्ञान, स्वाध्याय, सेवा, आस्था, विश्वास, दया, प्रेम, करुणा आदि को प्रतिष्ठित किया जाएगा तो नकारात्मक बातें धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ेंगी। कहा जाता है कि सतयुग में कोई व्यक्ति बीमार नहीं होता था। उस युग में कोई चोरी नहीं करता था। हिंसा, हत्या, नशा, कामुकता का कोई स्थान नहीं था। आज इससे ठीक उल्टा होकर अच्छे चरित्र का अवमूल्यन हो गया है।

आत्म सुख बनाता है तेजस्वी और ऊर्जावान

उपरोक्त बुराइयों के प्रति जागृति की प्रक्रिया सामाजिक अभियान बनाकर छेड़ी जाए तो कोई कारण नहीं कि इन अवांछित मूल्यों से निजात न पाई जा सके। जागृति का अर्थ है निज अस्तित्व के प्रति जागृति। शरीर तो आवरण है पर इस आवरण से ढ़की आत्मा स्वयं सुख स्वरूप है। उसे किसी बाहरी पदार्थ की आवश्यकता

(शेष: पृष्ठ 27 पर)

गतांक से आगे..

ब्रह्माकुमार स्टीव नारायण भाई के साथ एक भेंट

गयाना गणराज्य के पूर्व उपराष्ट्रपति और गयाना की ओर से भारत में नियुक्त (सेवानिवृत्त) उच्चायुक्त

भेंटकर्त्ताः ब्रह्माकुमार रंजीत फुलिया, सह-सम्पादक, 'द वर्ल्ड रिन्युअल'

प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से निराकार शिव परमात्मा को पहचानने वाले और उनके द्वारा प्राप्त दिव्य ज्ञान को जीवन में धारण करने वाले सर्वप्रथम राजनयिक व्यक्ति हैं ब्र.कु. भ्राता स्टीव नारायण जी। राजयोग के अभ्यास द्वारा वृत्ति के सकारात्मक परिवर्तन से किस तरह पारिवारिक और राजनैतिक जीवन में स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन का कार्य हुआ है, इसके बारे में आपने व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव हमारे साथ बांटे हैं। पिछले अंक में आपने ब्रह्माकुमारीज़ से प्रथम संपर्क, प्रथम आबू दर्शन, ईश्वरीय ज्ञान से राजनैतिक, पारिवारिक जीवन के सशक्तिकरण और बेट्टी बहन (आपकी पत्नी) के उत्कृष्ट योगदान की हृदयस्पर्शी चर्चा की थी। उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए इस अंक में प्रस्तुत हैं उमंगों को पंख लगाने वाले कुछ और नवीन अनुभव... – सम्पादक

प्रश्नः- आपको सभी दादियों के नज़दीक सम्बन्ध-सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, कृपया हमें उन विशेष दिनों के बारे में बतायें कि कैसे दादियों ने आप पर विशेष प्यार की बौछार की?

उत्तरः- मार्च, 1976 में गयाना में सेन्टर बनने के बाद पहली दादी, जो वहाँ आई, वो थी दादी गुलजार जी। फिर अगस्त, 1976 में मेरा पूरा परिवार भारत आया और हम दादी प्रकाशमणि, दीदी मनमोहिनी तथा अन्य दादियों से मिले। फिर भारत से गयाना लौटते वक्त हम लण्डन में रुके और दादी जानकी जी से मिले।

सन् 1983 से सन् 1990 तक दिल्ली में रहते समय दादियों के और भी नज़दीक आये। उन्हें जानने का अधिक मौका मिला। दादी गुलज़ार जी के साथ हम अनेक बार मिलते और बातें करते थे। उनके बारे में जो बात सबसे अच्छी लगती है वो है उनका हमेशा हंसते रहना। उनकी उपस्थिति में हमेशा शान्ति रहती है। वो ज्यादा बातें नहीं करतीं लेकिन वो हमेशा से आध्यात्मिक उन्नति का स्रोत रही हैं।

दादी प्रकाशमणि के व्यक्तित्व में एक आकर्षण था और उनकी आध्यात्मिक ऊंचाई के कारण हर कोई उन्हें पसन्द करता था। जब कभी भी मैं पाण्डव भवन में होता था, दादी के मीटिंग रूम के बाहर आंगन में बैठा करता था। मैं देखता था कि कई बार तो बहुत गम्भीर चेहरों के साथ बहनें आती थीं और दादी जी से मिलकर मुस्कराते हुए और खुश होकर वापस जाती थीं। दादी जी लोगों में खुशी जागृत किया करती थी और उनमें 'तुम बहुत विशेष हो' यह भाव भर देती थी।

दादी जानकी मेरे लिए आधार स्तम्भ और एक बड़ी शक्ति हमेशा बनी रही हैं। मेरी दोनों ओपन हार्ट सर्जरी के दौरान वे मुझसे स्वयं आकर मिली। पहली बार लण्डन में और दूसरी बार सेनफ्रान्सिस्को में। अभी तक भी 97 वर्ष की उम्र में वो सेवा के लिए देश-विदेश में भ्रमण करती हैं। यह केवल उन्हीं के लिए सम्भव है क्योंकि उनके पास शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की शक्तियाँ हैं। उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण बातों के लिए मैं हमेशा से उनकी महिमा करता आया हूँ। उनकी श्रेष्ठ क्षमता और नम्रता के प्रति मुझे हमेशा ही सम्मान रहा है। हर रोज़ वो अनेक आत्माओं से मिलती हैं और बाबा की प्रेरणाओं के बारे में कुछ न कुछ ज़रूर बताती हैं, वो सचमुच एक लाइट हाउस हैं।

दादियों ने हमेशा प्यार के धागे में अलौकिक परिवार

की सभी आत्माओं को बांधकर रखा है। दादियाँ बाबा के हरेक कार्य को विशेष महत्व देती हैं। कितने भी विघ्न आ जायें वो अपने भीतर की शान्ति में प्रवेश करके हल ढूंढ लेती हैं। उनकी हिम्मत, दृढ़ निश्चय और उमंग-उत्साह ही हर कार्य को समय पर पूरा करने में मुख्य बल प्रदान करते हैं। वे हर कार्य को भगवान का कार्य समझती हैं और अपने आपको निमित्त और सहयोगी मानती हैं। जब वे अपने विचारों को दूसरों के सामने रखती हैं तो लोग उनका सम्मान करते हैं। उनके शब्द ही लोगों के लिए वरदान साबित होते हैं और हर कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करते हैं।

दुनिया में ऐसा कोई भी नेता नहीं होगा जैसे कि वो हैं, जिसने भौतिक और आध्यात्मिक साधनों को मिलाकर ईश्वरीय कार्य में लगाया हो और बदले में भगवान से वरदान पाया हो। यह दुनिया में सबसे बड़ा इनाम है।

प्रश्नः-आप बड़े भाइयों से जो बातें करते थे, उनके बारे में बताइये।

उत्तरः- पहले वरिष्ठ भाई, जिनके सम्पर्क में मैं आया, भ्राता जगदीश चन्द्र जी थे। उनसे अगस्त, 1976 में पहली मधुबन यात्रा के दौरान मिलना हुआ। दादी प्रकाशमणि ने जगदीश भाई को मुझे एक शान्त क्लास में ले जाने के लिए कहा क्योंकि मैं ज्ञान की कुछ गहरी बातों की चर्चा करना चाहता था। पहली बात जो मैंने जगदीश भाई जी से पूछी वह विश्व के महापरिवर्तन के बारे में थी। मेरा प्रश्न सुनकर उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, क्या आपको विश्वास नहीं है, जो बाबा कहते हैं कि महापरिवर्तन होगा? मैंने जवाब दिया, हाँ है लेकिन आप मेरे पद को देखिये, जब मैं गयाना वापस लौटूंगा और कोई मुझे महापरिवर्तन के बारे में पूछेगा तो मैं उन्हें क्या जवाब दूँ। यह आदान-प्रादान कई घण्टों तक चला। जगदीश भाई ज्ञान की अथॉरिटी थे, उनके साथ इस चर्चा के दौरान मैंने ज्ञान के बहुत गहरे अनुभव किये। जब भी मैं जगदीश भाई से मिला, मैंने हमेशा महसूस किया कि वे हमेशा स्पष्ट और पक्षपात रहित थे। वे हमेशा आगे की सोचते थे। बाबा की हर शिक्षा को अपने जीवन में उतारते थे। उनके तीव्र पुरुषार्थ को देख लगता था कि ज्ञान-योग की रेस में अपनी बुद्धिमत्ता के बल से वे अन्य सभी लोगों से कई गुणा आगे थे।

भ्राता निर्वैर जी हमेशा से मिलनसार रहे हैं और उन्होंने हरेक आत्मा की आध्यात्मिक आवश्यकता पर ध्यान दिया है। हम हमेशा मधुबन में आते रहते थे तो निर्वैर भाई ने हमारे पूरे लौकिक परिवार को बहुत प्यार दिया और एक बड़े भाई की तरह हमेशा उनकी सम्भाल की। निर्वैर भाई के साथ से किसी बात की कोई फिकर नहीं होती थी क्योंकि मैं जानता था कि हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखा जायेगा। रमेश भाई हमेशा यज्ञ की सुव्यवस्थाओं के बारे में ईमानदार रहे हैं। जब यज्ञ के धन की नीतियों की बात आती है तब वे किसी व्यक्ति को न देखकर सेवाकेन्द्र और यज्ञ के बारे में सोचते हैं। उनका यज्ञ में बहुत ही महत्वपूर्ण रोल है।

बृजमोहन भाई हमेशा प्यार देते हैं। वो हर बात को एक मज़ाक की तरह से लेते हैं। उनके साथ रहकर ही मुझे बहुत आध्यात्मिक ताकत का अहसास होता है। मुझे याद है, हम एक बार ट्रेन से माउण्ट आबू से दिल्ली की यात्रा कर रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि आपको क्या लगता है कि बाबा की वर्तमान मुरलियों से किस बात की सलाह मिलती है? उन्होंने बताया, जब कभी भी कोई हमारी महिमा करता है तब हम सहज ही सहनशील और नम्र बन जाते हैं लेकिन जब कभी कोई हमारी निन्दा करता है और हम पर दोष डालता है और तब भी हम नम्र रहें, वही सच्ची नम्रता है। यह बात उन्होंने इतने हल्के रूप से कही जैसे कि मज़ाक कर रहे हों लेकिन मेरे लिए यह नम्रता का सच्चा अर्थ जानने के लिए काफी था। अब जबकि मैं मधुबन नहीं जा सकता, बृजमोहन भाई टोरन्टो में दो बार मुझे देखने आये। मेरी खटिया के बाजू में बैठकर उन्होंने बहुत ही मनोरंजक

बातें मेरे साथ शेयर की। मेरी आध्यात्मिक ऊंचाई को छूने में वो सफल रहे। उनके अस्तित्व से ही मुझे बहुत बल मिला।

प्रश्नः- आप दिल्ली में बहुत लम्बे समय तक रहे, कृपया दिल्ली का अनुभव बतायें।

उत्तरः- दिल्ली में गयाना के उच्चायुक्त का कार्यालय साउथ एक्सटेन्शन के काफी नज़दीक है। इसके कारण हमने साउथ एक्स्टेन्शन सेवाकेन्द्र पर ही क्लास करना शुरू कर दिया। इस प्रकार हम गोपाल दादा और उनके परिवार के नज़दीक आये जो कि वहाँ निमित्त थे। उस समय वह सेवाकेन्द्र किराये के मकान में था और जब उनको मकान मालिक से नोटिस मिला तो मुझे गोपाल दादा के साथ इस समस्या का समाधान करने का मौका मिला जिससे बहुत खुशी हुई। दादा गोपाल, दादी प्रकाशमणि जी से पूछे बिना कोई भी निर्णय नहीं लेते थे।

जब गोपाल दादा ने शरीर छोड़ा तब शान्ति बहन और गीता बहन की हिम्मत को देखना बहुत प्रेरणादायी रहा। सिरीफोर्ट सेवाकेन्द्र के प्रति मेरा व्यक्तिगत जुड़ाव रहा है। वहाँ बहनों के साथ बहुत समीपता से सेवा की है। यह मेरे दस साल की दिल्ली निवास की एक बहुत बड़ी उपलब्धि रही। उस समय मेरा बेटा कृष्णा वहाँ पर इंजीनियरिंग में आईआईटी से पीएचडी कर रहा था। तो परिवार के अधिकाधिक लोग मेरे साथ दिल्ली में ही थे। हरेक का अपनी-अपनी तरह से बाबा के कार्य में सहयोग बना रहा।

जब हम दिल्ली में आये तब बीस से अधिक सेन्टर वहाँ नहीं थे। जब हमने दिल्ली छोड़ी तब लगभग 40 सेन्टर खुल चुके थे और अब शायद यह संख्या 150 से भी अधिक हो चुकी होगी। हम लोग उस समय दिल्ली में अन्य सेन्टर्स पर भी जाया करते थे, जैसे कि करोलबाग में पाण्डव भवन, राजौरी गार्डन और मालवीय नगर। भारत में होने वाले लगभग सभी बड़े कार्यक्रमों में हम शामिल हुआ करते थे। दिल्ली में हमारे वो दिन पूरे ईश्वरीय परिवार के साथ बहुत खुशियों भरे थे। मैं हरेक का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्होंने इस अति विशेष परिवार का हिस्सा बनने में हमें मदद की।

प्रश्नः- बाबा की श्रीमत के अनुसार हमें अपने में अब कौन-सा परिवर्तन लाना चाहिए?

उत्तरः- बाबा हमेशा कहते रहते हैं कि भगवान धरती पर आ चुका है - यह सन्देश सारी दुनिया की आत्माओं तक पहुंचाना है। मुझे लगता है कि ब्र.कु. परिवार के द्वारा यह कार्य अभी नहीं हुआ है। मुख्य रूप से विदेशों में अभी यह कार्य बाकी है। विश्व में बाबा की प्रत्यक्षता के लिए हमें आध्यात्मिक धारणाओं को अपने दैनिक जीवन में अपनाने पर विशेष ध्यान देना है। चाहे हम घर में काम कर रहे हों, सेन्टर पर हों, चाहे कहीं भी हों, हमें इस तरह से सहयोग देना है कि हरेक व्यक्ति एक आध्यात्मिक चुम्बक बन जाये और अनेकों को बाबा की ओर आकर्षित करे। जब लोग हमारी शुद्ध आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होंगे इसका मतलब है कि वो बाबा की ओर आकर्षित होंगे।

प्रश्नः- अपने अनुभव के आधार से हमें बताइये कि बाबा का ज्ञान कैसे अन्य पेशेवर लोगों के जीवन में काम आ सकता है?

उत्तरः- मैं सरकारी क्षेत्र में मन्त्री था और बहुत सारी जिम्मेदारियाँ मुझ पर थी इसलिए समय पर मेरा कोई नियन्त्रण नहीं रहता था। ज्ञान में आने के बाद मैं जल्दी से जल्दी सोने की कोशिश करने लगा, फिर भी 10 या 11 बजे तक ही सोने जा पाता था। मैं सुबह चार बजे उठने का निश्चय करके सोता था ताकि अमृतवेला कर सकूं और बाबा की मुरली हर दिन सुन सकूं। मैं जो शक्ति इस निश्चय के प्रति लगा रहा था उसने मुझे पुरुषार्थ करने के लिए प्रेरित किया। मुझे इतनी अधिक ताकत मिलने लगी कि मैं कम समय में ज्यादा काम करने लगा। कभी भी मुझे थकान का अहसास नहीं होता था। मेरे सहयोगियों ने यही मुझमें देखा और यह कहकर प्रशंसा की कि काम करते

समय इतनी अधिक शक्ति आपको कहाँ से मिलती है।

दूसरा, ज्ञान में आने के बाद लोगों के प्रति और काम के प्रति मेरा व्यवहार बदल गया। व्यवहार में परिवर्तन राष्ट्रपति के ध्यान पर आया, उन्होंने मुझे कहा, देखो स्टीव (वो मुझे मेरे नाम से पुकारते थे), जबकि तुमने ज्ञान का अभ्यास करना शुरू किया है और आध्यात्मिकता की राह पर चल रहे हो इसलिए लोगों पर अपना बल प्रयोग नहीं कर रहे हो, इससे उनमें भय उत्पन्न नहीं हो रहा है। मैंने कहा, मैं ऐसा कोई भी तरीका नहीं अपनाऊंगा जिससे लोगों में भय उत्पन्न हो। **मैं नहीं चाहता कि मेरी उपस्थिति में वो अपना काम डर के आधार से करें। मैं चाहता हूँ, अगर उपस्थित न भी हूँ तो भी बिना डर के वो अपना काम अच्छे से करें। मैं ऐसा तरीका अपनाना चाहता हूँ जो उनकी पालना भी करे और उनमें शक्ति भी भरे जिससे वो जो पसन्द करते हैं वो कर सकें।** मैं उन्हें बातें इस तरह से समझाऊं जिससे कि वो समझ सकें। मैं उन्हें उनकी क्षमता के आधार पर कार्य करने की प्रेरणा देता रहूँ ताकि वो हर कार्य सही तरीके से करते रहें। उसके बाद मैंने देखा, यह जो नया तरीका मैं अपना रहा था, इस बात से राष्ट्रपति बहुत प्रसन्न थे और मेरी प्रशंसा करते थे। इस तरीके को अपनाने से लोगों के कार्य करने के तरीके और उनकी क्षमता में इजाफा हुआ था, परिणामस्वरूप उत्पादकता भी बढ़ गई थी। यह केवल मेरी वृत्ति और व्यवहार के परिवर्तन के कारण हो रहा था।

प्रश्नः- बी.के.भाई-बहनों को आप क्या सन्देश देना चाहेंगे?

उत्तरः- हमें डेट फिक्स करनी होगी। हमें एक दैवी परिवार के रूप में एकता के सूत्र में बंधना होगा। हमें आध्यात्मिक चुम्बक बनकर बाबा की ओर अन्य आत्माओं को आकर्षित करना होगा। हमें बाबा की श्रीमत का पूरा पालन करते हुए यज्ञ रक्षक बने रहना होगा। हमें बाबा की हर आश को पूरा करना होगा।

हमें स्वउन्नति का चार्ट बाबा को देकर मनसा सेवा का सर्टीफिकेट लेना होगा। मनसा सेवा सर्वश्रेष्ठ और बहुत सूक्ष्म सेवा है जिससे आत्मा सम्पन्नता और सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर सकती है। ❖

(अनुवादकः ब्र.कु. कल्पना, ग्लोबल हॉस्पिटल, आबू पर्वत)

पशुत्व के प्रतीक... पृष्ठ 23 का शेष

नहीं सुख पाने के लिए। जब शुद्ध आत्म स्वरूप को विस्मृत कर देते हैं तो उसमें समाहित शुद्ध सुख भी तिरोहित हो जाता है और फिर कवायद शुरू होती है बाहरी जगत में सुख खोजने की। इस क्रम में पदार्थों से कोई किसी एक इन्द्री को सन्तुष्ट करने में लग जाता है और कोई किसी अन्य इन्द्री को। स्वाद इन्द्री द्वारा और वासना द्वारा विकृत सुख प्राप्त करने की कवायद और अधिक भयानक है। इससे बचने का सरलतम उपाय है अपने को आत्मा समझ, आत्म सुख में रमण करना। एन्द्रिय सुख जहाँ मानव को निस्तेज, रोगी और असमय वृद्ध कर देते हैं वहीं यह आत्मसुख तेजस्वी तथा ऊर्जावान बनाने के साथ-साथ वृद्धत्व की गति को धीमा कर देता है।

वर्तमान समय सुखों के सागर परमात्मा शिव धरती पर अवतरित होकर हम सब मनुष्य आत्माओं की झोली अतीन्द्रिय सुख से भर रहे हैं। उस ईश्वरीय सुख को यदि मक्खन समान कहें तो उसके आगे नशा और वासना तो कीचड़ समान ही हैं। दृढ़ इच्छाशक्ति एवं संकल्पशक्ति के द्वारा सतत भागीरथ प्रयास से इसे किया जाना संभव है और यदि ऐसा होता है तो समाज में नशे और वासना का तीव्र प्रभाव घटेगा। इसके घटते ही अन्य सामाजिक बुराइयाँ भी घटने लगेंगी, क्योंकि सारी बुराइयों की यही तो जड़ है। ❖

शिवबाबा की छत्रछाया

● ब्रह्माकुमार विनायक, सांगली

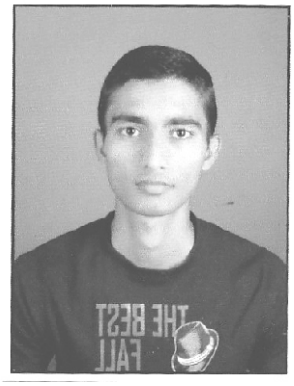

'जा को राखे साईं,
मार सके न कोए।
बाल न बांका कर सके,
चाहे सब जग बैरी होए।'

संत कबीरदास के इन वचनों को मैंने अपने जीवन में गहराई से अनुभव किया है। आज भी 13 जुलाई, 2011 का वो दिन आँखों के सामने आ रहा है जब सारा मुंबई शहर बम विस्फोट के कारण सहमा हुआ था।

बाबा की छत्रछाया का अनुभव

मेरा पूरा परिवार ईश्वरीय ज्ञान में है। मैं भी बचपन से ही ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। मैं अपने भाई के यहाँ मुंबई आया और इंडिया के सबसे बड़े जौहरी बाज़ार में मुझे मार्केटिंग संबंधित फील्ड में नौकरी मिली। मेरी ड्यूटी शाम को 7-8 बजे खत्म हो जाती थी। मुझे हफ्ते में एक बार बाहर गाँव मार्केटिंग के लिए जाना पड़ता था। तेरह जुलाई 2011 को मुझे शाम को कोल्हापुर के लिए निकलना था। ना जाने क्यों, दो दिन से मुझे शिवबाबा की बहुत याद आ रही थी। ऑफिस आते-जाते, उठते-बैठते मन ही मन में बाबा के मधुर गीत बजने लगते थे और बाबा का शांति स्तंभ दिखाई पड़ता था। ऐसा लगता था मानो बाबा की छत्रछाया हरपल मेरे साथ है।

धमाके के साथ गर्म झोंका

हमेशा की तरह उस दिन भी मैं काम निपटाकर सामान पैक करके, शाम 7.45 बजे ऑफिस से नीचे उतरा और जूस की दुकान की ओर जाने लगा। जहाँ बम विस्फोट हुआ वहीं सामने ही जूस की दुकान थी। घड़ी देखी तो 7.46 हो चुके थे। मुझे जल्द से जल्द वहाँ से जूस लेकर निकलना था पर अचानक अंदर से भाव जगा कि आज यहाँ जूस नहीं पीना चाहिए। मैं एक मिनट वहाँ वैसे ही खड़ा रहा और फिर वहाँ से 10 फीट आगे जो दूसरी जूस की दुकान थी, वहाँ चला गया। जूस का गिलास जैसे ही हाथ में लिया, ठीक 7.48 पर एक ज़ोरदार धमाका हुआ और मेरे पास से एक गर्म हवा का झोंका बड़ी तेज़ रफ्तार से गुज़र गया। क्षण भर के लिए मैं स्तब्ध रह गया। क्या हो रहा है, मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा था। मेरे सामने ही एक आदमी जलकर आ पड़ा और उसने वहीं दम तोड़ दिया।

मात्र एक खरोंच आई

मुड़कर देखा तो जहाँ मैं रोज़ जूस पीता था, उस दुकान के सामने नाश्ते के लिए खड़े सारे लोग जलकर राख हो गये थे। दो-तीन गाड़ियाँ भी ध्वस्त हो गई थीं। कइयों के हाथ-पैर कट गये थे। किसी के शरीर का आधा हिस्सा ही नहीं था। खून से लथपथ लाशें और भागते हुए लोग, पूरा नज़ारा ही बदल गया था। मेरी बुद्धि समझ ही नहीं पा रही थी कि यह सब क्या हो गया। तभी महसूस हुआ कि बाजू में खरोंच की वजह से दर्द हो रहा है और एक कान से सुनाई नहीं दे रहा है। मुझे लगा कि सिलेंडर फटा है और मैं ऑफिस की तरफ चल पड़ा। तीसरे माले पर हमारा ऑफिस था। मैं अंदर बैठ गया तब मुझे एक सहयोगी के पिताजी के माध्यम से पता चला कि तीन जगह मुंबई में बम रखे थे। एक जूस की दुकान के सामने एक छाते में बम रखा था। दूसरा, ओपेरा हाऊस में नाश्ता गली में रखा था और तीसरा दादर में रखा था। यह सुनकर मैं हैरान रह गया। बाहर आकर देखा तो पुलिस और मीडिया वालों ने पूरा एरिया सीलबंद कर दिया था और फायर ब्रिगेड वाले आग बुझा रहे थे। मैं बम विस्फोट से केवल 10 फीट दूरी पर था पर मुझे मात्र एक खरोंच आई थी। तब मुझे समझ में आया कि बाबा की उन दिनों में क्यों इतनी याद आ

रही थी। बाबा लगातार तीन दिन हर पल मेरे साथ छत्रछाया बनकर रहे। यह सब बाबा की कमाल है। मैं बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूँ क्योंकि बाबा ने मुझे ऐसे बचाया जैसे मक्खन से बाल निकला हो। उस पल का अहसास आज भी हर घड़ी यह गीत बनकर मन में रहता है –

तुम तो यहीं कहीं बाबा,
मेरे आस-पास हो।
आते नजर नहीं पर
मेरे साथ-साथ हो।

तनावमुक्त जीवन के सूत्र

तनावमुक्त जीवन के लिए सबसे पहला कदम है कि जो हमारे पास है उसका आनंद लें और जो नहीं है उसे याद कर दुखी न हों। भगवान से भी शिकायत न करें, निमित्त भाव से कर्म करें, मन की खुशी गुम न होने दें। हर हार हमें कुछ सिखाती है। अपने आप को कभी अकेला महसूस न करें। ईश्वर हमारा साथी है।

तनाव के कारण डायबिटीज़ एवं रक्तचाप की समस्या हो सकती है। हृदयरोग का मुख्य कारण तनाव है। सुबह उठकर सैर करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और तनावमुक्त महसूस करते हैं। किसी भी बात को लिखने से तनाव और पीड़ायें कम हो जाती हैं। कलम चलाओ, तनाव भगाओ। सर्वशक्तिवान भगवान हमारा साथी है, सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, इस बात को बार-बार स्मृति में लाओ। किसी की बात को सुनकर फैलाओ नहीं, तभी उस बात को आप आसानी से भूल सकेंगे। किसी भी घटना के बारे में ज्यादा न सोचें। जितना ज्यादा सोचेंगे, परिस्थिति उतना ही विकराल रूप धारण करती जायेगी। बेफिक्र बादशाह बन कर जीयें। जिस बात से तनाव होता है, उससे बचें।

कभी भी अपनी तुलना दूसरों से न करें, तुलना करने से मन की खुशी नष्ट हो जाती है। एक बार एक बच्चे के 91% अंक आये और दूसरे बच्चे के 90% अंक आये। इक्यानवे प्रतिशत अंक लाने वाले बच्चे का चुनाव हो गया और 90% अंक लाने वाले बच्चे का नहीं हुआ जिस कारण उसको इतना डिप्रेशन हुआ कि लंबे काल तक इलाज चला। हर व्यक्ति को अपने भाग्य अनुसार मिलता है। कोई किसी का भाग्य छीन नहीं सकता। कई लोग हमेशा चिंता में रहते हैं कि हमारे साथ भविष्य में क्या होगा, हमारा भविष्य कैसा होगा। तनावमुक्त रहने के लिए हमेशा यह सोचो, **जो हुआ वो भी अच्छा था, जो हो रहा है वो भी अच्छा है और जो होगा वो भी अच्छा होगा।**

अगर हम किसी का आदर करते हैं और वो हमारा आदर नहीं करता तो भी अपनी सोच को नकारात्मक न बनायें। अपना विश्वास ऐसा बना लें कि मैं वो करूँगा जिससे मेरा मन संतुष्ट होगा। मन में किसी के प्रति नकारात्मक भावना न आने दें। महात्मा गांधी के तीन बंदर **'बुरा न देखें, बुरा न बोलें, बुरा न सुनें'**, के साथ-साथ एक और **'बुरा न सोचें'** जोड़ लें। अगर कोई गलती होती है तो तुरंत क्षमा मांग लें। **छोटों को स्नेह दें और बड़ों का आदर करें।** दूसरों की कमियाँ बार-बार न निकालें, नहीं तो वे एक दिन आप में भी आ जायेंगी। अपने आप को ज्यादा समझदार व दूसरे को मूर्ख न समझें।

एक बार एक पादरी से किसी व्यक्ति ने पूछा कि आप कई लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं, इसका राज़ क्या है? पादरी ने सुंदर उत्तर दिया कि हम एक-दूसरे की विशेषताओं को देखते हैं। जितना हम दूसरों की बुराइयाँ देखेंगे, अपने लिये उतने ही शत्रु तैयार करेंगे। अगर हमारी कामनायें सौ प्रतिशत हैं तो हमारी खुशी शून्य है। अगर हमारी कामनायें शून्य हैं तो हमारी खुशी सौ प्रतिशत है। अगर खुशी नष्ट तो शान्ति भी नष्ट। किसी की जिन्दगी में दखल देकर अपनी स्थिति खराब न करें। जीवन जीने की कला को जानकर ज़िंदगी का आनन्द लें। इस प्रकार तनावमुक्त एवं खुशहाल जीवन व्यतीत करें।

– ब्रह्माकुमारी सुमन, मडलौडा, पानीपत

आवश्यक सूचना

(सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1. नये वर्ष 2013-14 में पत्रिकाओं का भारत में वार्षिक शुल्क 90 रुपये तथा विदेशों में वार्षिक शुल्क 1,000 रुपये ही रहेगा। आजीवन शुल्क भारत में 2,000 रुपये तथा विदेश में 10,000 रुपये रहेगा।

2. शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल **'ज्ञानामृत'** या **'The World Renewal'** के नाम पर ड्राफ्ट, मनीऑर्डर या डाकघर द्वारा EMO से भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई.मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिस द्वारा उसी दिन 10 मिनट के अंदर भारत के किसी भी कोने से पत्रिकाओं की राशि शान्तिवन डाकघर में पहुँच जाती है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। EMO के लिए मनीऑर्डर की तरह ही अपना पूरा पता तथा पिन कोड नं. अवश्य देना होता है। साथ में फोन नंबर तथा ई-मेल ID जरूर लिखें।

3. आपको ज्ञात होगा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच शान्तिवन में है।

4. ड्राफ्ट के ऊपर केवल **'ज्ञानामृत, शान्तिवन'** या **'The World Renewal, Shantivan'** ही लिखें। किसी व्यक्ति या शहर का नाम न लिखें।

5. अभी आप ऑनलाइन भुगतान सुविधा द्वारा भी ज्ञानामृत के सदस्य बन सकते हैं। बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है –

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन
सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367
सेविंग बैंक एकाउंट का नाम: World Renewal Gyanamrit
IFS Code : SBIN0010638
E-mail : hindigyanamrit@gmail.com

ऑनलाइन भुगतान करने के बाद ऊपर लिखे ई-मेल पर अपना पूरा पता और बैंक भुगतान का पूरा विवरण भेजें। डिपोजिट केवल NEFT के द्वारा ही करें।

6. नये डायरेक्ट पोस्ट करने वाले पते टाइप करके या बड़े अक्षरों में साफ-साफ अंग्रेजी में ही लिखकर भेजें।

संपर्क के लिए

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।
फोन : 02974-228125, फैक्स : 02974-228116
मोबाइल : 09414006904, 09414423949
E-mail: omshantipress@bkivv.org, hindigyanamrit@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.**मिरिक (दार्जिलिंग)**- अतर्राष्ट्रीय सस्थान यूरेशिया रेयूकाई के सस्थापक युसुन मासुनागा, बहन मुमा हिरो कुमासु नागा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पूर्णिमा बहन। 2.**दार्जिलिंग**- श्रीश्री गुरुदेव गुरूंग रिम्पोछे को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मुन्ना बहन। 3.**गया**- श्रीलका के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता महिन्द्रा राजपक्षे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शीला बहन। 4.**अम्बाह (मुरैना)**- अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक श्री बाल शुक महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मुन्नी बहन। 5.**कुश्मा**- नेपाल के पूर्व महाराजाधिराज ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राधिका बहन। 6. **उदगीर**- पजाब के राज्यपाल महामहिम भ्राता शिवराज पाटिल चाकरकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. महानन्दा बहन। 7.**मिश्रिख तीर्थ**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उ.प्र. के कारागार राज्यमत्री भ्राता रामपाल राजवशी। साथ में ब्र.कु. सरस्वती बहन। 8.**गुड़गाँव (सरस्वती विहार)**- ए.वी.एम. भ्राता के पी नायर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कुसुम बहन। 9. **कोरापुट**- उड़ीसा के मुख्यमत्री भ्राता नवीन पटनायक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. स्वर्ण बहन। 10.**माछीवाडा (लुधियाना)**- विधायक भ्राता अमरीक सिह ढिल्लो को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राज बहन। 11.**मुरैना**- भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव भ्राता नरेन्द्र सिह तोमर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रेखा बहन। 12.**अमेठी (कानपुर)**- शिवध्वजारोहण करते हुए उ.प्र. के सिचाई मत्री भ्राता गायत्री प्रसाद प्रजापति। साथ में ब्र.कु. सुमित्रा बहन तथा ब्र.कु. सुषमा बहन।

Regd. No. RAJHIN10563/65, Postal Regd. No. RJ/SRO/9559/2012-2014
Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 1-6 of the month.

काठमाण्डू (नेपाल)-

महाशिवरात्रि आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए नेपाल के उप-राष्ट्रपति महामहिम भ्राता परमानन्द झा, सनातन धर्म सेवा समिति अध्यक्षा बहन शीला पन्त, ब्र.कु. दीपा बहन तथा अन्य।

दिल्ली (आर.के.पुरम)-

'गीता के भगवान का अवतरण' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद बहन मेनका गांधी, ब्र.कु. शिवानी बहन, दिल्ली महिला आयोग अध्यक्षा बहन बरखा सिंह, ब्र.कु. सुन्दरी बहन तथा ब्र.कु. अनीता बहन।

कुरुक्षेत्र-

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में तन्त्र विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का उद्घाटन करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति लेफ्टि.जनरल डी.डी.एस.सन्धू, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य।

रायपुर-

'अपराधमुक्त समाज और हमारा दायित्व' विषय पर आयोजित परिचर्चा का शुभारंभ करते हुए केन्द्रीय जांच ब्यूरो के पूर्व निदेशक भ्राता डी.आर.कार्तिकेयन, प्रमुख लोकायुक्त न्यायमूर्ति लालचन्द भादू, लोक सेवा आयोग अध्यक्ष भ्राता प्रदीप जोशी, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. भरत भाई तथा अन्य।